हमारे डिजीटल प्लेटफार्म
www.scgnews.in
scgnews Social Channel Group
YouTube

RNI NO. CHHHIN/2023/87466

लाईफ वर्सिटी

मासिक

उम्मीद रखना ऊंची उड़ानों की, छांव में ना खो जाना तुम, ठोकरों से सीख लेना जरा, सफर जारी रखना तुम

वर्ष : 2 | अंक : 03 | माह : अगस्त 2024 | पृष्ठ : 8 | संपादक- नरेन्द्र कुमार पाण्डेय, 8817194979 | मूल्य : 5 रू.

सादर नमन...

आज तो स्वर्ग में भी गुलाब अधे होंगे
मेरी माँ के स्वागत में.
बड़ी अद्भुत थी मेरी माँ
तन में झुर्रियाँ आ गई थी
मगर माँ बूढ़ी नहीं थी
सुबह की धूप सी मुस्कान
सितारों सी चमकती आँखे
हम सब पर बराबर रखती थी नज़र .

मैं नहीं कह सकता कि तुम मर चुकी हो
तुम तो चली गई हो कहीं दूर देश
मुस्कुराते हुये, हाथ हिलाते हुये.
जो होगा शायद यहाँ से भी ज्यादा खूबसूरत
जहाँ सब हँसते – हँसाते होंगे
दुखों का नहीं होगा कोई स्थान.

याद आती है वो तेरी चुप्पी और
न दूर होने वाली तेरी बीमारी
पर अब तुझे नही होगा कोई दर्द .
भगवान की प्यारी बाहें
तुझे पूरा ठीक कर देंगी माँ .

अब हमारे पास तेरी यादे है और
एक फ्रेम में टंगी तेरी तस्वीर
जिनसे मैं कभी अलग नहीं हो सकता.

तुम अद्भभुत थी माँ
तेरा जीवन शुरू से अंत तक
खुशियों का पर्याय था .
भले ही तुझे
भगवान अपने पास रखा होगा
मगर हमारे दिल – मन्दिर में
तुम सदैव बसी रहोगी माँ..

स्वतंत्रता खोने का भय रक्षाबन्धन लाया

नरेन्द्र पाण्डेय

स्वतंत्रता दिवस मनाने के बाद आज हम रक्षा बंधन मना रहे है . तो बात दोनों त्योहारों के परस्पर सम्बन्धों की कर लेते है . रक्षाबंधन अर्थात सुरक्षा का बंधन . बंधन मतलब आधीनता होता है . तात्पर्य यह अपनी सुरक्षा के लिए किसी के अधीन हो जाना जो आप से ज्यादा सामर्थ्यवान हो . बंधन दो प्रकार के होते है एक से बचाया जाता है और दुसरे से गला घोटा भी जा सकता है . पर बंधना कोई नहीं चाहता , सभी स्वतंत्रता चाहते है मगर उन्हें नहीं पता कि उनकी यह चाहत भी उन्हें किसी बंधन से तो बाँध ही देती है और वो बंधन होता है अज्ञानता का . बंधन जो आपकी रक्षा कर सकता है वो ज्ञान का बंधन है . इस बंधन से बंधने पर आपकी रक्षा भी होती है और आप स्वतंत्र भी रहते है . हमारा छोटा मन और सांसारिक विषय-वस्तुए घुटन ला सकती है तनाव उत्पन्न कर सकती है लेकिन ज्ञान वाले विराट मन सुरक्षा देता है . जीवन में बंधन आवश्यक है इसलिए ईश्वर से बंधों,गुरु से बधों जो आपको अनुशासित रखते है .

यूँ तो स्वतंत्रता और अनुशासन एक दुसरे के विपरीत भी है और पूरक भी . रक्षा प्रणाली का उद्देश्य स्वतन्त्रता को बचाए रखना है लेकिन क्या सुरक्षा के साथ स्वतंत्रता है ? क्या सैनिको को स्वतंत्रता है या वो नियम क़ानून से बंधे होते है . उन्हें यदि बायाँ पैर उठाने को कहा जाय तो वो दायाँ पैर नहीं उठा सकते . वो स्वाभाविक चाल भी नहीं चल सकते . वो देश की स्वतंत्रता की रक्षा करते है उन्हें स्वयं की आजादी नहीं है . ऐसे ही हमारे पुलिस वाले भी जो हम सबकी रक्षा को तत्पर रहते है क्या वो स्वत्रंत रहते है ?

स्वतंत्रता की रक्षा तो अनुशासन से ही हो सकती है . अनुशासन और स्वतंत्रता एक ही सिक्के के दो पहलु है ये साथ साथ चलते है . यदि स्वतंत्रता चाहिए तो कुछ नियमों का पालन भी करना होगा . अनुशासन ङ्क हीन स्वत्रंता बिना सेना की देश सामान है . यदि आप अपना ध्यान केवल अपनी स्वतन्त्रता पर देते हो अनुशासन पर नहीं तो यह आपको दु:ख ही देगा .

> **"अनुशासन और स्वतंत्रता एक ही सिक्के के दो पहलु है ये साथ साथ चलते है . यदि स्वतंत्रता चाहिए तो कुछ नियमों का पालन भी करना होगा . अनुशासन – हीन स्वत्रंता बिना सेना की देश सामान है ."**

स्वतंत्रता का उद्देश्य भय को दूर करना है लेकिन स्वतंत्रता खोने का डर ही तो सुरक्षा की चाहता पैदा करता है . कई धर्मो में भय द्वारा लोगो को जीवन में अनुशासित रहने की शिक्षा दी जाती है . शिशु के मन में जब तक माँ का पर्याप्त प्रेम और समय मिलता है तब तक भय नहीं होता परन्तु जैसे जैसे वह बड़ा होता है वह आत्मनिर्भर होता जाता है . उसमे थोड़ी भय की भावना जागने लगती है वह सावधान होने लगता है . स्वतंत्रता के साथ वह अब अपना कदम सावधानी के साथ बढाता है .

जो व्यक्ति स्वतंत्र है उसे इस बात का खेद है कि उनमे अनुशासन नहीं है वो हमेशा संयम में रहने की कसमे खाते रहते है जो स्वतंत्र नहीं है वे उसके समाप्ति का इंतज़ार करते रहते है . एक बार उन लोगो को देखिये जिनमे ज़रा भी अनुशासन नहीं है वे स्वतंत्र तो है मगर दुखी है क्योंकि वो व्यवस्थित नहीं होते . अव्यवस्था हमेशा तनाव से भरी होती है . बिना अनुशासन के स्वतंत्रता घुटन देती है . यकीन मानिए यह अनुशासन अंत नहीं एक साधन है . बिना चारदीवारी के घर की कल्पना नहीं की जा सकती . और चारदीवारी के अंदर स्वतंत्रता की अवस्था कठिन है . यदि हम व्यवहारिक रहेगे तो आनंद की अवस्था में रह सकते है . मन में सजगता , ह्रदय में प्रेम और कर्मो में पवित्रता रखनी होगी . अनुशासन और सवतंत्र के मध्य संतुलन रखना होगा . हमेशा दोस्तों से घिरा व्यक्ति एकांत चाहता है तो एकांत में रहने वाला अपने अकेलेपन को दूर करने के लिए साथी की तलाश करता है . ठंड में रहने वाले गरम स्थान की चाहत रखते है तो गरम प्रदेश वालो को ठण्डी जगह अच्छी लगती है . जीवन की यही विडम्बना है हम सब संतुलन की खोज में है जिसके लिए आत्म ज्ञान जरुरी है और आत्म ज्ञान के लिए ध्यान जरुरी है . ध्यान के लिए अनुशासन चाहिए . अनुशासन के साथ ध्यान करने से ज्ञान मिलता है और ज्ञान से सुरक्षा और स्वतंत्रता दोनों की प्राप्ति होती है . ***लाईफ वर्सिटी परिवार की तरफ से आप सभी को स्वतंत्रता दिवस और रक्षाबन्धन की बहुत बहुत शुभकामनाये ...***

आधुनिक विज्ञान संग अध्यात्मिक ज्ञान : सम्पूर्ण स्वास्थ्य का आधार

डॉ.अनिल गुप्ता

अक्सर हम अपना अधिकांश समय दुसरे मनुष्यों तथा वस्तुओं का अध्ययन करने में निकाल देते है । परिणामस्वरूप हमारे पास स्वयं का अध्ययन करने के लिए समय ही नहीं बचता है । जब हम स्वयं को समय नहीं दे पाते है तो आस ङ्क पास के वातावरण का रंग हमारे ऊपर चढने लगता है । जो हमें दिन ङ्क प्रतिदिन कुविचारों के कीचड़ से मैला करता रहता है । यदि हम प्रतिदिन के अपने सभी साफ ङ्क सफाई वेक कार्यों को बंद कर दे, तो क्या हम स्वच्छ और स्वस्थ रह पाएंगे ? कभी नहीं ! यदि हमने घर में झाड़ू लगाना बंद कर दिया तो कुछ ही दिनों में सब जगह धूल और मिट्टी ही नजर आएगी । यदि हम एक दिन के लिए भी ना नहाये तो शरीर बदबू मारने लगता है । इसीलिए हम प्रतिदिन अपनी भौतिक साफ सफाई का ध्यान बखूबी रखते है । किन्तु क्या हम अपने मन की भी साफ -सफाई का ऐसा ही खयाल रखते है ? शायद नहीं ! क्यों ?

शायद इसलिए क्योंकि हमें उसकी गन्दगी दिखती नहीं । किन्तु यदि गहराई से विचार किया जाये तो काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष, कपट, पैशुनता, हिंसा, असत्य, स्तेय, अब्रह्मचर्य, अशौच, ईश्वर में अश्रृद्धा और अविश्वास, परिग्रह और भय आदि इसी वातावरण के कीचड़ की गन्दगी है जो हमारे विचारों तथा संस्कारों को दूषित करती रहती है । जब कोई ध्यान नहीं दिया जाता तो यही कुविचार हमारे मन की गहराइयों में जमने लगते है जिन्हें संस्कार कहा जाता है । आपने तो सुना होगा ङ्क मन ही मनुष्य के बंधन और मोक्ष का कारण है, जो मन विषयों में आसक्त हो तो बंधन का कारण बनता है और निर्विषय अर्थात वीतराग हो जाता है तो मुक्ति अर्थात मोक्ष का कारण बनता है ।

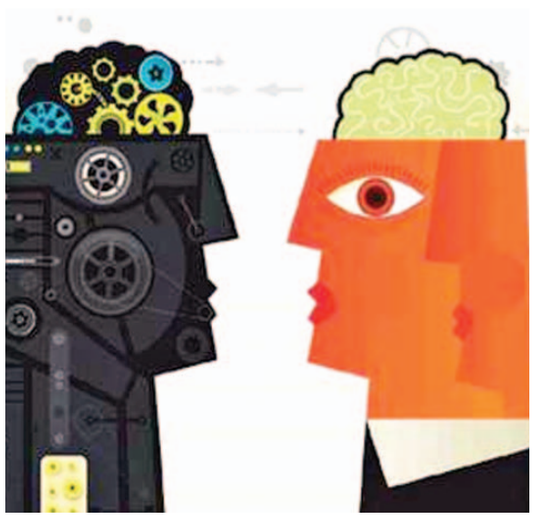

आधुनिक युग में हम अपने शारीरिक स्वाथ्य को अच्छा बनाये रखने के लिए अनेको अनेक उपाय करते है , किन्तु हमारे मन की क्या आवश्यकताएं है इसके लिए हम कुछ भी नहीं करते . यही कारण है की मन आज रोगी हो रहा है . आज के दौर में मानसिक स्वास्थ्य को अच्छा रखने की जानकारी होना अति आवश्यक है . रोग मुक्त और निरोगी रहने के लिए प्राण,मन और आत्म शक्ति यों का संतुलन जरुरी है .

हमारे शास्त्रों में कहा गया है , स्वाध्याय मन की गंदगी को साफ करके आत्मा को परमात्मा के निकट बिठाने का सर्वोत्तम मार्ग है । अत: प्रत्येक विचारवान व्यक्ति को प्रतिदिन संकल्पपूर्वक सद्ग्रंथो का स्वाध्याय अवश्य करना चाहिए । योग दर्शन के अनुसार हमारा शरीर तीन आधारभूत तत्वों प्राणशक्ति (life force energy), मानसिक शक्ति (मन) और अध्यात्मिक शक्ति अर्थात आत्मा का सम्मिश्रण है.प्राण ही वह तत्व है जिसके कारण हमारा जीवन क्रियाशील रहता है . हमने इसी के साथ जन्म लिया है और इसी के साथ चले जायेंगे मेडिकल साइंस भी कहता है कि भ्रूण चार माह तक माता के प्राणों पर निर्भर रहता है और पांचवे माह से वह एक स्वतंत्र इकाई हो जाता है . जब शरीर में प्राणों का उचित मात्रा में संचार होता है तो हम उत्साह से बहरे उर्जावान और स्वास्थ रहते है और इसके विपरीत अवस्था में हम थकान आलस और बीमारी का अनुभव करते है . माडर्न विज्ञान खोज के लिए बाहरी या भौतिक जगत का प्रयोग करता है जबकि आध्यात्मिक खोज के लिए आत्मिक जगत का प्रयोग किया जाता है। विज्ञान बतलाता है कि 'यह जगत क्या है?' जबकि अध्यात्म बोध कराता है कि 'मैं कौन और क्या हूँ?' विज्ञान की समझ हमें दूसरों से परिचित कराती है जबकि आध्यात्म की बुद्धि हमें स्वयं से परिचित कराती है। यह जगत चेतन एवं अचेतन पदार्थों से बना हुआ है। पदार्थों का परीक्षण विज्ञान के अंतर्गत आता है एवं चेतन व अंतर्मन को समझ कर उसे जाग्रत रखना आध्यात्म के अंतर्गत आता है। वास्तव में विज्ञान शब्द की पूर्णता, उद्देश्य एवं सार्थकता आध्यात्म में ही निहित है। अत: हम कह सकते हैं की आध्यात्मिकता विज्ञान का अंतिम स्वरूप है।

आनंद, संतोष और कृतज्ञता जैसी सकारात्मक भावनाओं का अनुभव करने से हमारा मूड अच्छा होता है और आप अधिक बेहतर महसूस करते हैं। इसे ही पॉजिटिव हेल्थ कहा जाता है . इसलिए यदि पूर्ण स्वास्थ्य चाहते है , आनन्द की अवस्था में रहना चाहते है तो आधुनिक विज्ञान को अद्धयात्मिक विज्ञान के साथ समझाना होगा . व्यस्ततम दिनचर्या से कुछ पल खुद के लिए निकालना होगा , आइये खुद डेट पर चलते है खुद को खुद से समझते है . सफ़र जारी है ....

1 कदम आगे 2 कदम पीछे

12 दिन में 3 अहम फैसले को लेकर बैकफुट पर सरकार

क्या विपक्ष के होश उड़ाने वाली रणनीति पर काम कर रहे मोदी ?

लेटरल एंट्री ये शब्द आपने बीते कुछ दिनों में कई बार सुना होगा। लेटरल एंट्री को आखिरकार सरकार ने रद्द कर दिया है। लगातार राहुल गांधी, मल्लिकार्जुन खरगे, अखिलेश यादव, एमके स्टालिन जैसे तमाम नेता इसकी मुखालफत कर रहे थे। लगातार एक्स पर उसको लेकर पोस्ट कर रहे थे। मीडिया में इसे उठाया जा रहा था। आखिरकार वही हुआ जो विपक्ष के दवाब के तहत होना चाहिए था।

2014 में 282, 2019 में 303 लेकिन 4 जून 2024 में ये जादुई आंकड़े यानी 272 से दूर 240 पर जा सिमटा। अपने दम पर पूर्ण बहुमत लाने वाली बीजेपी ने अपने पहले और दूसरे कार्यकाल में कई बड़े और कड़े फैसले चुटकी बजाकर ले लिए। लेकिन 2024 में वो देखने को मिल रहा है जो इससे पहले के मोदी 1.0 और मोदी 2.0 में देखने को नहीं मिला। अबकी बार एनडीए की सरकार इन दिनों मोदी सरकार अगर एक कदम आगे बढ़ाती है तो उसे दो कदम पीछे वापस खींचने पड़ रहे हैं। 12 दिन में तीन अहम फैसले ऐसे हैं जिस पर सरकार बैकफुट पर नजर आई है। मोदी सरकार को अपने फैसले रद्द करने पड़े हैं, वापस लेने पड़े हैं या फिर उसे ठंडे बस्ते में डालने पड़े हैं। संसद में बड़ी धूमधाम से वक्फ बोर्ड के नए कानून का ऐलान हुआ। इसको लेकर बिल भी लाया गया। लेकिन फिर इसे ठंडे बस्ते में डाल दिया गया। एक ब्रॉडकास्ट बिल लाया गया। लेकिन जब विपक्ष ने इसको लेकर हंगामा किया। उस बिल को ही

विड्रो कर लिया गया। ताजा मामला सरकारी नौकरियों में सीधी भर्ती से जुड़ा है। लेटरल एंट्री ये शब्द आपने बीते कुछ दिनों में कई बार सुना होगा। लेटरल एंट्री को आखिरकार सरकार ने रद्द कर दिया है। लगातार राहुल गांधी, मल्लिकार्जुन खरगे, अखिलेश यादव, एमके स्टालिन जैसे तमाम नेता इसकी मुखालफत कर रहे थे। लगातार एक्स पर उसको लेकर पोस्ट कर रहे थे। मीडिया में इसे उठाया जा रहा था। आखिरकार वही हुआ जो विपक्ष के दवाब के तहत होना चाहिए था।

लेटरल एंट्री यानी बिना कोई यूपीएससी का एग्जाम दिए अलग अलग मंत्रालयों में सचिव, उपसचिव और डॉयरेक्टर जैसे पदों पर नियुक्ति को लेकर एक नोटिफिकेशन जारी किया गया था। 45 खाली पद हैं जिनकी भर्ती के लिए एक विज्ञापन जारी किया गया था। इस विज्ञापन को अब वापस ले लिया गया है। लेकर अखिलेश तक ने आंदोलन तक की धमकी दे डाली थी। वहीं एनडीए के घटक दल ने भी खुलकर इसकी मुखालफत की थी। लगातार विपक्ष इसे आरक्षण विरोधी, सोशल जस्टिस विरोधी और सामाजिक न्याय का विरोधी बता रहा था। विभिन्न केंद्रीय मंत्रालयों में उच्च पदों पर विशेषज्ञता वाले लोगों की एक प्रकार से सीधी भर्ती अर्थात लेटरल एंट्री वाला विज्ञापन वापस लेने से यही स्पष्ट हो रहा है कि मोदी सरकार दबाव में आ गई।

R.G KAR में सेक्स और ड्रग रैकेट

अम्बुज अग्निहोत्री

कोलकाता के आरजी कर मेडिकल कॉलेज में 9 अगस्त को ट्रेनी डॉक्टर से रेप और हत्या के मामले में चौंकाने वाली जानकारी सामने आ रही है। CBI को अब तक की जांच और डॉक्टर के बैचमेट्स के बयानों से पता चला है कि मानव अंगों के अवैध कारोबार से पर्दा उठाने की कोशिशो को रोकने के लिए ट्रेनी डॉक्टर को रास्ते से हटाया गया। आरजी कर मेडिकल कॉलेज और अस्पताल के पूर्व प्रिंसिपल संदीप घोष से सीबीआई ने पॉइंट टू पॉइंट सवाल किए. सूत्रों की माने तो मामले की जड़ें काफी गहरी हैं। रेप इसलिए किया गया, ताकि यह घटना आम लगे। बताया जा रहा है कि मेडिकल कॉलेज में लंबे समय से सेक्स और ड्रग रैकेट चलाने का आरोप है। 23 साल पहले 2001 में कॉलेज के हॉस्टल में एक छात्र की मौत की कड़ियां भी इससे जुड़ने लगी हैं। ट्रेनी डॉक्टर से रेप-हत्या की घटना ने 2001 में आरजी कर मेडिकल कॉलेज के हास्टल में 31 साल के सौमित्र बिश्वास की मौत की यादें ताजा कर दीं। पुलिस ने उसे आत्महत्या करार दिया था, लेकिन घरवालों ने हत्या बताया था। साथी डॉक्टरों ने आरोप लगाया था कि सेक्स रैकेट का भंडाफोड़ होने के डर से हत्या की गई थी। उस समय खबरें उठी थी कि उस समय सेमिनार रूम और हॉस्टल में सेक्स वर्कर्स को लाना आम बात थी। इनके जरिए छात्राओं को ब्लैकमेल किया जाता था। उसकी एक महिला मित्र के साथ ऐसी ही हरकत की गई थी और सौमित्र ने विरोध किया था।

एक राजनीतिक पार्टी के सीनियर नेता ने दावा किया है कि उनके पास डॉक्टरों के एक वॉट्सएप ग्रुप के स्क्रीनशॉट हैं, जिससे अस्पताल में सेक्स और ड्रग रैकेट का पता चलता है। इसमें एक अन्य पार्टी के सीनियर नेता और उनके भतीजे का जिक्र है। CBI को पूछताछ में कुछ सुराग मिले है जिसमे मेडिकल कॉलेज के चार लोगों के नाम सामने आए हैं। इनमें तीन डॉक्टर और एक हाउस स्टाफ है। दावा है कि ये चारों एक सियासी दल से जुड़े हैं और अस्पताल में सेक्स व ड्रग रैकेट चलाते थे। अंदेशा यह भी है कि, आरजी कर मेडिकल कॉलेज और अस्पताल में मेडिकल कचरे के निपटान, कुछ दवा और सामान की सप्लाई का काम प्रबंधन के करीबी को मिला था, पर शर्त अनुसार सप्लाई नहीं की जा रही थी। पीड़ित को इसकी भनक थी। ट्रेनी डॉक्टर सबूतों के साथ सोशल मीडिया पर पूरे मामले के खुलासे की योजना बना रही थी।

वैसे जब कहीं और कभी इस तरह के मामले सामने आते हैं तो 2012 की दिल्ली में हुए गैंग रेप की निर्भया के नाम की चर्चा होने लगती है। लेकिन उससे हमने क्या सीखा है, हमारे सिस्टम में क्या बदलाव हुआ है।

कॉलेज के छात्रों ने पूर्व प्रिंसिपल संदीप घोष पर आरोप लगाए हैं कि यहां जो हो रहा था, उसकी जानकारी घोष को थी। आरोप है कि आरजी कर मेडिकल कॉलेज और अस्पताल में पोस्टमॉर्टम के लिए आने वाले लावारिस शवों को प्रैक्टिकल के लिए रखा जाता था। उनके शरीर से अंग भी निकाल लिए जाते थे। फिलहाल CBI ने इसकी पुष्टि नहीं की है।कोलकाता पुलिस के एक अधिकारी बताते हैं कि ट्रेनी डॉक्टर से रेप-मर्डर केस की शुरुआती जांच में एक सियासी दल के वरिष्ठ नेता और एक नेता के पुत्र का नाम आया है। हालांकि, कोई सबूत नहीं मिलने से उन्हें संदेह के दायरे से हटा दिया गया।कोलकाता के पुलिस आयुक्त विनीत गोयल ने पत्रकारों से कहा था कि महज किसी बयान के आधार पर बिना ठोस सबूत के किसी को गिरफ्तार नहीं किया जा सकता।हालाँकि ये साहब खुद कई मामलों में संदेहास्पद है रसूख के चलते इन पर कार्यवाही नहीं हो पा रही . डॉ. घोष को करीब से जानने वाले कुछ लोगों से बात की। इससे पता चला कि घोष न सिर्फ करप्शन के गंभीर आरोपों से घिरे थे, बल्कि उनका इतना रसूख था कि दो बार ट्रांसफर होने के बाद भी कोई उन्हें हटा नहीं पाया। प्रिंसिपल बनने वालों की लिस्ट में उनका नंबर 16वां था, लेकिन वे रातोंरात पहले नंबर पर आ गए।संदीप को प्रिंसिपल बनाने के पीछे का मुख्य मकसद पैसों की वसूली करना था। नियुक्ति के बाद ही संदीप ने गलत काम करना शुरू कर दिया।'

'वो गलत तरीके से बायो मेडिकल कचरे का निपटान कर रहा था। टेंडर से कमीशन लेता था। सब लेन-देन कैश में होता था। वो एकेडमी के फंड का भी गलत इस्तेमाल करता था। ये बात स्वास्थ्य भवन को पता थी। हमने कई बार शिकायतें कीं। फिर भी कुछ नहीं हुआ। पार्किंग में टू-व्हीलर पार्क करने के भी पैसे लिए जाते थे। इसके लिए कोई रसीद नहीं मिलती थी।'

कॉलेज के पूर्व डिप्टी सुपरिनटैंडेंट अख्तर अली बताते हैं कि हॉस्टल में छात्रों से वसूली होती थी। ये काम घोष के लिए छात्रों का एक ग्रुप करता था।परीक्षा में फेल होने वाले छात्रों को पास कराने के लिए 8 से 10 लाख रुपए लिए जाते थे। यह पैसा जूनियर डॉक्टर वसूलते थे। जो लोग MBBS पास करना चाहते थे, उनके लिए रेट तीन लाख तय किया गया था। घोष के अधीन 10-12 जूनियर डॉक्टर थे, जो शराब सप्लाई भी करते थे।

TMC के पूर्व राज्यसभा सांसद शांतनु सेन ने भी आरोप लगाया है कि घोष अपनी मंडली के जरिए कॉलेज चलाता था। घोष पर क्रेश्चन पेपर लीक जैसे आरोप भी हैं। हालाँकि कुछ छात्र डॉ. संदीप घोष का समर्थन कर रहे है,बताते हैं, 'संदीप घोष और कुछ स्टूडेंट्स का नाम जबरदस्ती लिया जा रहा है। छात्रों की आपसी लड़ाई को गलत तरह से पेश किया गया है।'

उधर सीएम ममता बनर्जी ने पदयात्रा निकाली जिसे देख लोग हैरत में आ गए। लोगों का सवाल था कि उनके पास स्वास्थ्य और गृह दोनों महकमा है तो पदयात्रा किसके खिलाफ कर रही थीं।इस मामले पर निर्भया की मां ने कटाक्ष किया और सवाल खड़े किए। निर्भया की मां आशा देवी, ममता बनर्जी से सवाल भी करती है। उनके मुताबिक सबसे बड़ी बात यह कि सरकारें एक दूसरे पर आरोप लगी हैं, अच्छा होता कि इस विषय पर लोग मिलजुल कर काम करते।

वैसे जब कहीं और कभी इस तरह के मामले सामने आते हैं तो 2012 की दिल्ली में हुए गैंग रेप की निर्भया के नाम की चर्चा होने लगती है। लेकिन उससे हमने क्या सीखा है, हमारे सिस्टम में क्या बदलाव हुआ है। 12 साल पहले दिल्ली की सडक पर फार्मेसी की कोर्स करने वाली छात्रा के साथ भी कुछ एसी ही दरिंदगी हुई थी फर्क सिर्फ इतना था की ये काण्ड सेमीनार हाल में हुआ और वो चलती बस में हुआ था . दिल्ली में दिसंबर की सर्द रातों में जिस तरह से लोग निकल कर इंडिया गेट पर आए थे उसका असर यह हुआ कि सरकार को नियम कानून बनाने पड़े। बेटियों और महिलाओं की सुरक्षा के लिए निर्भया फंड भी बना। ये बात अलग है कि कानून तो बना लेकिन जमीन पर क्या कुछ हुआ है उसे आप खुद समझ सकते हैं। यह समय महज कैंडल लाईट जलाने का नहीं है आन्दोलन का है , परिवर्तन लाने का है .बेटियों की सुरक्षा का है . कल दिल्ली में लुटी थी आज बंगाल में हो सकता है कल आपका राज्य हो या आपका परिवार और घर भी . चलने से पहले आपके नाम कुछ ये पंक्तियाँ ....

रण की भेरी बज रही, उठो मोह निद्रा त्यागो!
पहला शीष चढ़ाने वाले माँ के वीर पुत्र जागो!
'रावण का वध स्वयं करूंगा!' कहने वाला राम जगे
और कौरव शेष न बचेगा कहने वाला श्याम जगे!
हे भारत के राम जगो मै तुम्हे जगाने आया हूँ,

12 महीनों के अनुसार भारतीय आहार के नियम

आयुषी पाण्डेय

- **चैत्र (मार्च-अप्रैल)**- इस महीने में गुड का सेवन करे क्योकि गुड आपके रक्त संचार और रक्त को शुद्ध करता है एवं कई बीमारियों से भी बचाता है। चैत्र के महीने में नित्य नीम की 4 - 5 कोमल पतियों का उपयोग भी करना चाहिए इससे आप इस महीने के सभी दोषों से बच सकते है। नीम की पतियों को चबाने से शरीर में स्थित दोष शरीर से हटते है।
- **वैशाख (अप्रैल-मई)**- वैशाख महीने में गर्मी की शुरुआत हो जाती है। बेल पत्र का इस्तेमाल इस महीने में अवश्य करना चाहिए जो आपको स्वस्थ रखेगा। वैशाख के महीने में तेल का उपयोग बिल्कुल न करे क्योकि इससे आपका शरीर अस्वस्थ हो सकता है।
- **जयेष्ठ (मई-जून)**- भारत में इस महीने में सबसे अधिक गर्मी होती है। ज्येष्ठ के महीने में दोपहर में सोना स्वास्थ्य वर्द्धक होता है , ठंडी छाछ , लस्सी, ज्यूस और अधिक से अधिक पानी का सेवन करें। बासी खाना, गरिष्ठ भोजन एवं गर्म चीजो का सेवन न करे। इनके प्रयोग से आपका शरीर रोग ग्रस्त हो सकता है।
- **अषाढ़ (जून-जुलाई)**- आषाढ़ के महीने में आम , पुराने गेंहू, सत्तु , जौ, भात, खीर, ठन्डे पदार्थ , ककड़ी, पलवल, करेला, बथुआ आदि का उपयोग करे व आषाढ़ के महीने में भी गर्म प्रकृति की चीजों का प्रयोग करना आपके स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकता है।
- **श्रावण (जूलाई-अगस्त)**- श्रावण के महीने में हरड का इस्तेमाल करना चाहिए। श्रावण में हरी सब्जियों का त्याग करे एव दूध का इस्तेमाल भी कम करे। भोजन की मात्रा भी कम ले - पुराने चावल, पुराने गेंहू, खिचड़ी, दही एवं हलके सुपाच्य भोजन को अपनाएं।
- **भाद्रपद (अगस्त-सितम्बर)**- इस महीने में हलके सुपाच्य भोजन का इस्तेमाल कर वर्षा का मौसम् होने के कारण आपकी जठराग्नि भी मंद होती है इसलिए भोजन सुपाच्य ग्रहण करे। इस महीने में चिता औषधि का सेवन करना चाहिए।
- **आश्विन (सितम्बर-अक्टूबर)**-इस महीने में दूध , घी, गुड़ , नारियल, मुन्नका, गोभी आदि का सेवन कर सकते है। ये गरिष्ठ भोजन है लेकिन फिर भी इस महीने में पच जाते है क्योकि इस महीने में हमारी जठराग्नि तेज होती है।
- **कार्तिक (अक्टूबर-नवम्बर)**- कार्तिक महीने में गरम दूध, गुड़, घी, शक्कर, मुली आदि का उपयोग करे। ठंडे पेय पदार्थो का प्रयोग छोड़ दे। छाछ, लस्सी, ठंडा दही, ठंडा फ्रूट ज्यूस आदि का सेवन न करे , इनसे आपके स्वास्थ्य को हानि हो सकती है।
- **अगहन (नवम्बर-दिसम्बर)**- इस महीने में ठंडी और अधिक गरम वस्तुओ का प्रयोग न करे।
- **पौष (दिसम्बर-जनवरी)**-इस ऋतू में दूध, खोया एवं खोये से बने पदार्थ, गौंद के लाडू, गुड़, तिल, घी, आलू, आंवला आदि का प्रयोग करे, ये पदार्थ आपके शरीर को स्वास्थ्य देंगे। ठन्डे पदार्थ, पुराना अन्न, मोठ, कटु और रुक्ष भोजन का उपयोग न करे।
- **माघ (जनवरी-फ़रवरी)** - इस महीने में भी आप गरम और गरिष्ठ भोजन का इस्तेमाल कर सकते है। घी, नए अन्न, गौंद के लड्डू आदि का प्रयोग कर सकते है।
- **फाल्गुन (फरवरी-मार्च)**- इस महीने में गुड का उपयोग करे। सुबह के समय योग एवं स्नान का नियम बना ले। चने का उपयोग न करे।

आप को लगेगा अजीब बकवास है, किन्तु

एक दर्द और जिन्दगी भर का ट्रॉमा

अनामिका पाण्डेय

महाराष्ट्र के ठाणे में 3 और 4 साल की दो बच्चियों के यौन-शोषण का मामला सामने आया है। घटना बदलापुर के एक प्ले स्कूल की है। जानकारी सामने आने के बाद गुस्साई भीड़ और पुलिस के बीच झड़प हुई। भीड़ ने स्कूल में तोड़फोड़ की, उसके बाद बदलापुर रेलवे स्टेशन पर 6 घंटे तक ट्रेनें रोकी रखीं। पुलिस ने लाठीचार्ज कर रेलवे ट्रैक खाली कराया।

मामले की जांच SIT करेगी बता दे कि 23 साल के आरोपी ने 16 अगस्त को स्कूल के बाथरूम में बच्चियों का यौन-शोषण किया था। बच्चियों के पेरेंट्स ने 17 अगस्त को एफआईआर दर्ज कराई। पुलिस ने पॉक्सो एक्ट के तहत केस दर्ज कर आरोपी को अरेस्ट किया है। स्कूल के प्रिंसिपल, क्लास टीचर और एक महिला स्टाफ को सस्पेंड भी किया गया है। सरकार ने मामले की जांच के लिए SIT गठित की है। केस फास्ट ट्रैक कोर्ट में चलाया जाएगा। अब अकोला में भी ऐसा ही मामला सामने आया है। काजीखेड़ के जिला परिषद स्कूल के टीचर प्रमोद मनोहर पर स्कूली छात्राओं से छेड़छाड़ का आरोप लगा है।

आरोपी टीचर ने आठवीं क्लास में पढ़ने वाली 6 छात्राओं का यौन उत्पीड़न किया। टीचर उनको अश्लील वीडियो दिखाता था और गलत तरीके से छूता था। छात्राओं की शिकायत पर पुलिस ने टीचर को अरेस्ट कर लिया है।

कोलकाता आरजी कर अस्पताल में ट्रेनी डॉक्टर के संग रेप और हत्या का मामला ठंडा नहीं पड़ा है। हजारों की संख्या में डॉक्टर मरीजों की सेवा के साथ प्रदर्शन कर रहे हैं। लेकिन अब जो जानकारियां सामने आ रही हैं वो पुलिस प्रशासन को यूं ही कठघरे में नहीं खड़ा कर रही है। 9 अगस्त को अस्पताल के सेमिनार हॉल से डॉक्टर के शव को बरामद किया गया था। 9 अगस्त को ही दोपहर में तीन बजे के करीब मृतक के मां-बाप ने हत्या की आशंका जताई। लेकिन औपचारिक तौर पर एफआईआर पहली बार रात को 11.45 मिनट पर दर्ज की गई। इस बीच उसी दिन रात को 8.30 बजे शव का अंतिम संस्कार भी करा दिया गया। अब सवाल यही से शुरू होता है कि कोलकाता पुलिस को एफआईआर दर्ज करने में इतना समय क्यों लगा और मृतक डॉक्टर का अंतिम क्रिया कर्म क्यों करा दिया गया।

अदालती दस्तावेज और पुलिस अधिकारियों के बयानों से पता चलता है कि असिस्टेंट प्रोफेसर सुमित कुमार तपदर 9 अगस्त को सुबह 9.45 मिनट पर सेमिनार हाल में शव के बारे में जानकारी देते हैं और एफआईआर दर्ज करने की अपील करते हैं। लेकिन पुलिस को दोपहर 2.45 मिनट पर औपचारिक तौर पर एफआईआर दर्ज करने की अर्जी मिलती है. पुलिस की टाइमलाइन के मुताबिक 9 अगस्त को सुबह 10.10 मिनट पर उन्हें जानकारी मिली। वो घटना वाली जगह पर 10.30 मिनट पर पहुंचे। कोलकाता पुलिस की होमिसाइड टीम 11 बजे पहुंचती है उसके बाद 12.30 बजे पुलिस के बड़े अधिकारी मौके पर पहुंचते हैं। 12.45 बजे अप्राकृतिक मौत का केस दर्ज होता है। अब इसी देरी पर पीड़िता के घर वालों को ऐतराज है। उनका कहना है कि तीन बजे बॉडी को देखने के बाद सबको यह कहते रहे हैं कि मौत हत्या की वजह से हुई। हमने पांच या साढ़े पांच बजे के करीब शिकायत दर्ज कराई।

सुप्रीम कोर्ट में कोलकाता रेप-मर्डर केस की सुनवाई हुई। चीफ जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ ने कहा- व्यवस्था में सुधार के लिए हम और एक रेप का इंतजार नहीं कर सकते। अदालत ने मेडिकल प्रोफेशनल्स की सेफ्टी के लिए 14 मेंबर्स की नेशनल टास्क फोर्स बनाई है, इसमें 9 डॉक्टर्स और केंद्र सरकार के 5 अधिकारी शामिल हैं। टास्क फोर्स मेडिकल प्रोफेशनल्स की सुरक्षा, वर्किंग कंडीशन और उनकी बेहतरी के उपायों की सिफारिश करेगी। सुनवाई के दौरान मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ ने देरी पर बात की। उन्होंने कहा कि ऐसी घटना होने के तुरंत बाद अस्पताल अधिकारियों का दायित्व है कि वे एफआईआर दर्ज करें, भले ही माता-पिता मौजूद हों या नहीं।

हिंडनबर्ग रिपोर्ट को अडानी समूह ने बताया शातिराना और दुर्भाग्यपूर्ण

हिंडनबर्ग ने इस दफा सेबी अध्यक्ष माधबी पुरी बुच को लपेट लिया। सीधे तौर कहें तो रिपोर्ट में दावा किया गया है कि अडानी समूह की जो ऑफशोर कंपनियों में इनका निवेश है। इस तरह के आरोप को पहले माधवी पुरी के पति ने नकारा फिर सेबी अध्यक्ष ने भी आरोपों को सिरे से खारिज किया। अब अडानी समूह ने रिपोर्ट को दुर्भावनापूर्ण और शातिराना बताया। हिंडनबर्ग रिसर्च के ताजा आरोप दुर्भावनापूर्ण, शरारती और सार्वजनिक रूप से उपलब्ध सूचनाओं के हेरफेरपूर्ण चयन हैं, जो 'तथ्यों और कानून की अवहेलना के साथ व्यक्तिगत मुनाफाखोरी' के लिए पूर्व-निर्धारित निष्कर्षों पर पहुंचने के लिए हैं।रविवार को अडानी समूह के प्रवक्ता ने अमेरिका स्थित शॉर्ट सेलर द्वारा समूह के खिलाफ नए आरोप लगाने के कुछ घंटों बाद कहा। अडानी समूह के प्रवक्ता ने 11 अगस्त को स्टॉक एक्सचेंजों को दी गई एक फाइलिंग में बताया, हम अडानी समूह के खिलाफ इन आरोपों को पूरी तरह से खारिज करते हैं जो कि बदनाम दावों का पुनरावर्तन हैं जिनकी पूरी तरह से जांच की गई है, जो निराधार साबित हुए हैं और जिन्हें माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने जनवरी 2024 में पहले ही खारिज कर दिया है।

अडानी समूह ने दोहराया कि इसकी विदेशी होल्डिंग संरचना पूरी तरह से पारदर्शी है, जिसमें सभी प्रासंगिक विवरण नियमित रूप से कई सार्वजनिक दस्तावेजों में प्रकट किए जाते हैं। प्रवक्ता ने कहा कि अडानी समूह का हमारी प्रतिष्ठा को बदनाम करने के लिए जानबूझकर किए गए इस प्रयास में उल्लिखित व्यक्तियों या मामलों के साथ बिल्कुल भी कोई व्यावसायिक संबंध नहीं है। 'हम पारदर्शिता और सभी कानूनी और नियामक आवश्यकताओं के अनुपालन के लिए दृढ़ता से प्रतिबद्ध हैं।'

हमेशा सोच समझकर काम करें

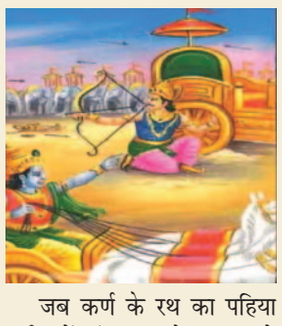

जब कर्ण के रथ का पहिया जमीन में फंस गया तो वह रथ से उतरकर उसे ठीक करने लगा। वह उस समय बिना हथियार के थे...भगवान कृष्ण ने तुरंत अर्जुन को बाण से कर्ण को मारने का आदेश दिया।

अर्जुन ने भगवान के आदेश को मान कर कर्ण को निशाना बनाया और एक के बाद एक बाण चलाए। जो कर्ण को बुरी तरह चुभता हुआ निकल गया और कर्ण जमीन पर गिर पड़े।

कर्ण, जो अपनी मृत्यु से पहले जमीन पर गिर गया था, उसने भगवान कृष्ण से पूछा, 'क्या यह तुम हो, भगवान? क्या आप दयालु हैं? क्या यह आपका न्यायसंगत निर्णय है! एक बिना हथियार के व्यक्ति को मारने का आदेश?'

सच्चिदानंदमय भगवान श्रीकृष्ण मुस्कुराए और उत्तर दिया, 'अर्जुन का पुत्र अभिमन्यु भी चक्रव्यूह में निहत्था हो गया था, जब उन सभी ने मिलकर उसे बेरहमी से मार डाला था, आप भी उसमें थे। तब कर्ण तुम्हारा ज्ञान कहाँ था? यह कर्मों का प्रतिफल है. यह मेरा न्याय है।'

सोच समझकर काम करें। अगर आज आप किसी को चोट पहुँचाते हैं, उनका तिरस्कार करते हैं, किसी की कमजोरी का फायदा उठाते हैं। भविष्य में वही कर्म आपकी प्रतीक्षा कर रहा होगा और शायद वह स्वयं आपको प्रतिफल देगा।

हिन्दू विरोध राहुल को विरासत में मिला

नरेन्द्र पाण्डेय

एक झूठ जब हजार बार आत्मविश्वास के साथ बोला जाता है, तब वह सत्य प्रतीत होने लगता है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में दस वर्षों के बाद भी एनडीए की 295 सीटें आई हैं, तो वहीं यूपीए के दस वर्षों के शासन के बाद कॉंग्रेस की सीटें महज दहाई के आंकड़ों में सिमट गई थी। कॉंग्रेस 50 का आंकड़ा भी पार करने में असफल हुई थी। उस समय भी कॉंग्रेस के समस्त नेताओं की भाषा और शैली इसी प्रकार थी, जो आज है।

राजनीति में सत्ता पक्ष का विरोध विपक्ष द्वारा करना राजनीति की शोभा है लेकिन पार्टी का विरोध करते-करते जब भारत के विपक्षी दल भारत के ही विरोधी दिखने लगे हैं। जब से 4 जून 2024 को चुनाव परिणाम घोषित हुए हैं, तभी से ही कॉंग्रेस इस सदमे से बाहर नहीं आ पा रही है कि वह चुनाव हार चुकी है। 99 सीटों की अकड़ ऐसी है कि वह हिन्दू विरोधी और भारत विरोधी भी बातें लगातार करती जा रही है।

दरअसल वर्ष 2014 के चुनावों में जब भारतीय जनता पार्टी की जीत हुई थी तो इसे दस वर्ष की यूपीए सरकार के प्रति नाराजगी मानी गई थी। और इसे एक्सीडेंटल माना गया था। मगर जब वर्ष 2019 में एनडीए की जीत हुई थी, तब कॉंग्रेस का घमंड और असहिष्णुता एक बार फिर से प्रकट रूप में आई थी और नकारने का दौर आरंभ कर दिया था। मगर वह नकारना कब भारत विरोध में बदल गया, यह नहीं पता चल पाया था और उसे असहिष्णुता को हर उस कदम के विरोध के साथ देखा गया, जो सरकार ने नीतिगत परिवर्तनों के लिए उठाए थे। सरकार का विरोध करना हर प्रतिपक्ष का कर्तव्य होता है, परंतु देश की गरिमा के विरुद्ध जाना? यह आज तक नहीं देखा था।

प्रश्न तो पूछा ही जाना चाहिए कि कॉंग्रेस अपनी हार को स्वीकार न करके भाजपा के प्रति अपनी घृणा को भारत और हिंदुओं के प्रति घृणा में परिवर्तित क्यों कर रही है?

वैसे राहुल का यह हिन्दू विरोध उन्हें

विरासत में मिला है . इसके लिए थोड़ा हमे इतिहास के पन्ने पलटने होंगे जिसमे एक पत्र है जो 5 नवम्बर 1946 को लिखा था जब अंग्रेजी हुकूमत भारत को सत्ता स्थान्तरित कर रही थी भारत धर्म के आधार पर दो हिस्सों में बटने को तैयार हो गया था और जवाहर लाल नेहरु को अधिकारिक तौर पर भारत का प्रधानमन्त्री घोषित कर दिया गया था . नेहरु का यह पात्र महात्मा गांधी की करीबी स्वतंत्रता संग्राम सेनानी सरोजनी नायडू की बेटी पद्मजा जोशी को लिखा था .जिसमे नेहरु लिखते है कि आज ही मै फ्लाईट से लौटा हूँ काफी थका हुआ महसूस कर रहा हूँ ,लेकिन थके होने के बावजूद आधीरात को मै यह पात्र तुम्हर लिख रहा हूँ क्योंकि मुझे अभी जो खबर मिली है उसने मुझे काफी रिलैक्स किया है. जिस खबर की नेहरु जिक्र कर रहे वो बिहार की थी जहा 400 किसानो को पुलिस द्वारा घेरकर मार दिया गया था वो किसान जो नोआखाली के हिन्दू नरसंघार का विरोध कर रहे थे . नेहरु ने तब बिहार की इस पुलिस फायरिंग की घटना को दुखद बताया था और नोआखाली में जो हुआ था उसे दुर्भाग्यपूर्ण.

1984 का दंगा भी आपको याद होगा किस तरह सिख समुदाय के लोगो की हत्या की जा रही थी ,कई सिख्खो के गले में तो टायर बांधकर ज़िंदा जलाया गया था . कई हजार सिख्ख मारे गए थे तब राजीव गाँधी ने कहा था की जब भी कोई बड़ा पेड़ गिरता है तो कुछ नुकसान होता है . उस समय की सत्ताधीन पार्टी कांग्रेस खुद को डेमोक्रेटिक और अहिंसावादी होने का तमगा टांग रही है . कांग्रेस शासन काल में कई सम्प्रदायिक दंगे हुए उस पर उनका ध्यान नहीं है लेकिन आज विपक्ष में बैठे है तो हिन्दू हिंसक नज़र आ रहा है .

कांग्रेस वैसा ही व्योहार करती है जैसा 1946 के पूर्व अंग्रेज करते थे . शायद इसीलिए तो महात्मा गाँधी ने अपने वीटो का प्रयोग करते हुए सरदार पटेल की जगह नेहरु को प्रधानमन्त्री बनवाया था . उस समय के एक जर्नलिस्ट दुर्गादास जी अपने किताब में लिखते है की जब मैंने महात्मा गांधी से पूंछा की उन्होंने नेहरु को प्रधानमंत्री क्यों चुना तो महात्मा गाँधी ने मुस्कुराते हुए कहा की हम सब में एक जवाहर ही अंग्रेज जैसा है . इससे समझा जा सकता है की उस समय महात्मा गांधी एक अंग्रेजी मानसिकता वाल पीएम चाहते थे . इसलिए कहता हूँ की राहुल गांधी हिन्दू विरोध उन्हें विरासत में मिला है . इसके अलग भी राजनीति हो सकती है यह उनकी सोच के परे है .

अब ज़रा गुजरात भी चल लेते है 2002 की बात है गोधरा में कार सेवको से भरी ट्रेन को जला दिया जाता है सैकड़ो कार सेवक ज़िंदा जल कर मर जाते है तब भी यह परिवार एक समुदाय विशेष की तरफ बायस ही था. हिन्दुओ के प्रति नफरत उस ससमय भी दिखी थी .कौन क्या कहता है उससे परे हटकर इतिहास के पन्नो को पलटिये और समझिये हम किस दौर से गुजरे है और किस दौर से गुजरने वाले है . यह जागने का समय है .

राहुल की मणिपुर जाने की मंशा क्या है?

नरेन्द्र पाण्डेय

इस समय असम में भारी वर्षा के चलते बाढ़ के हालात है और मणिपुर भी इससे अछुता नहीं रहता . बाढ़ तो बिहार में भी तबाही लाता है लेकिन हम उस बाढ़ की चिंता करने जा रहे है जो आने वाले बजट सत्र में विपक्ष द्वारा लाया जाएगा . जिसकी तैयारी एक बार फिर राहुल गांधी ने अपने मणिपुर दौरे से शुरू कर दी है . असम में इस समय भाजपा की सरकार है और हेमंत विस्वा सरमा मुख्यमंत्री जिन्हें राहुल गांधी अपना जानी दुश्मन मानते है और हेमंत विश्वा सरमा भी राहुल गांधी को पसंद नहीं करते . असम में कांग्रेस के संसद गोरव गोगोई भी है जो असम के तीन बार मुख्यमंत्री रहे तरुण गोगोई के पुत्र है और राहुल गांधी के कोर टीम के अहम हिस्सा भी . आप को बता दे कि संसद में गत दिनों मणिपुर के सांसदों को सदन के बेल तक ले जाकर जो हंगामा करवाया गया था उसके सूत्रधार गोरव गोगोई ही थे . शायद राहुल गांधी को यह आमन्त्रण गोरव का ही रहा होगा की असम आकर बढ़ का जायजा लिया जाय और पड़ोस में मणिपुर भी घूम लिया जाय. मणिपुर देश की राजनीति का सेंसिटिव मुद्दा है ,यहाँ घटित हुई घटना ने समूचे देश को हिला कर रख दिया था . हालाँकि एसी ही घटना अभी हाल ही में पश्चिम बंगाल में भी घटित हुई है , लेकिन राहुल गांधी वहाँ नहीं जाते और न ही इस मामले पर उनका सोशल मिडिया आदि पर कोई पोस्ट आता है .

वहाँ जिस तरह से एक हिन्दू महिला को सरे आम निर्वस्त्र कर मारा-पीटा जाता है उस पर कांग्रेस के किसी भी नेता की सम्वेदना नहीं आती , किसी का ध्यान भी नहीं जता, क्योंकि वहाँ कांग्रेस की सहयोगी ममता बनर्जी की सरकार है . बात ममता बनर्जी की हुई तो बता दूँ

की संदेशखाली मामले पर कोलकता हाई कोर्ट के सीबीआई जांच के आदेश के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट पहुँची ममता को झटका लगा है . सुप्रीम कोर्ट ने भी सीबीआई जांच को उचित ठहराया है . इस पर भी राहुल गांधी की जुबां नहीं खुलती क्योंकि वहाँ तो हमला हिन्दू समुदाय पर हो रहा है . राहुल तो वही मुखर होते है जहां हमला मुस्लिम,क्रिश्चन समुदाय पर होता है .

खैर हम बात कर रहे थे राहुल गांधी के इस समय मणिपुर दौरे की. आइये समझा जय राहुल गांधी के मणिपुर दौरे के पीछे की उनकी मंशा को . बात यह है कि 22 जुलाई से पार्लियामेंट में बजट सत्र शुरू होने वाला है उसके लिए उन्हें कुछ मसाला तो चाहिए जिससे वो सदन में हंगामा कर सके , हो हल्ला करवा सके . सदन की कार्यवाही को बाधित कर सके , रोक सके, पी एम को अपमानित कर सके और हिन्दुओ को बेइज्जत कर सके .

अब देखिये न मणिपुर दौरे पर जब पत्रकारों ने राहुल से प्रश्न किया कि आप बार बार मणिपुर आ रहे यहा की समसयाओ से आप भली भाति अवगत हो गए है तो आपके अनुसार इस समस्या का समाधान क्या है तो राहुल गांधी कहते है कि आपका यह क्योश्चन स्पेशली डिजाइन किया गया है और मुद्दों से भटकाने की साजिश वाला है. वैसे राहुल की यह कोई नइ बात नहीं थी ,जब भी कोई राहुल से प्रश्न करता है तो उन्हें साजिश ही नज़र आती है . कभी किसी सवाल को वो बीजेपी का बता देते है तो कभी प्रश्न पूछने वाले पत्रकार को ही भाजपा का बता देते है . दरअसल राहुल गांधी की समस्या यह है कि वो केवल अपनी सुनाना चाहते है और यह भी चाहते है की कोई इस पर उनसे कुछ न पूंछे .

हिन्दू नरसंहार पर मोहब्बत की दुकान नहीं खुलती

हर्षित पाण्डेय

1947 में स्वतंत्रता के साथ देश को विभाजन का दंश भी मिला था। आज बांग्लादेश की स्थिति उस त्रासदी की एक झलक है जहां कट्टरता के सामने हिंदुत्व की साझे की संस्कृति का क्रंदन दिखाई दे रहा है।बांग्लादेश से हिंदुओं पर हो रही हिंसा पर भयावह वीडियो निकलकर आ रहे हैं। यह बहुत ही स्तब्ध करने वाली और दिल दहला देने वाली घटना है. जैसे-जैसे तस्वीरें और वीडियो सामने आ रहे हैं, आतंक की ऐसी फिल्म उभरकर आ रही है कि दरिंदगी भी शरमा जाए। मगर फिर भी भारत में और विदेशों में कुछ ऐसे लोग हैं, जिन्हें यह सब न ही दिखाई दे रहा है और न ही सुनाई। बांग्लादेश में हिंदुओं पर हमले केवल उनकी धार्मिक पहचान के कारण ही हुए हैं और हो रहे हैं। यदि मामला राजनीतिक होता तो मंदिरों पर हमले क्यों होते? क्यों लड़कियों के साथ बलात्कार होते? क्यों सार्वजनिक रूप से हिंदुओं का अपमान होता? मगर ऐसा हो रहा है। ऐसा लगातार हो रहा है।

यह सही है कि अवामी लीग के मुस्लिम नेताओं और कार्यकर्ताओं को भी मारा जा रहा है, परंतु उन्हें मारने के साथ ही उनके धार्मिक स्थलों को तो नहीं जलाया जा रहा है? और यह भी सत्य है कि अवामी लीग के प्रति गुस्सा इसी कारण है क्योंकि वे हिंदुओं के प्रति कुछ सहानुभूति रखते हैं उनका दृष्टिकोण कुछ उदारवादी रहता है।

बांग्लादेश में हिंदुओं के साथ जो अत्याचार हो रहे हैं, उसे लेकर विश्व के लगभग हर कोने में प्रदर्शन शुरू हो गए हैं। यूएन मुख्यालय से लेकर कनाडा, अमेरिका, लंदन आदि स्थानों पर लोग प्रदर्शन करके हिंदुओं के लिए न्याय की मांग कर रहे हैं, लेकिन यह दुर्भाग्य पूर्ण है कि भारत के कम्युनिस्टों की ओर से बांग्लादेश में मारे जा रहे हिंदुओं के प्रति एक भी शब्द नहीं आया है और इससे भी अधिक दुर्भाग्यपूर्ण यह है कि जब बांग्लादेश में हिंदुओं को मारा जा रहा था, भयानक हिंसा हर ओर थी, उस समय भारत में जंतर-मंतर पर कम्युनिस्ट एनी राजा और अर्थशास्त्री एक्टिविस्ट ज्यां द्रेज सहित कुछ लोग फिलिस्तीन के लिए नारे लगा रहे थे। बीजेपी लगातार आरोप लगा रही है कि कांग्रेस हिंदुओं पर हो रहे अत्याचारों पर खामोशी की चादर डालकर सो रही है. बांग्लादेशी हिंदुओं की हत्याओं और उनके परिवार के यौन उत्पीड़न के मामलों पर राहुल गांधी समेत तमाम बड़े कांग्रेस लीडर्स की चुप्पी के बाद बीजेपी ने रील हिंदू और रियल हिंदू के बीच का अंतर समझाया है. इस बीच शेख हसीना के प्रधानमंत्री पद से इस्तीफा देने के बाद नोबेल पुरस्कार से सम्मानित मोहम्मद यूनुस ने गुरुवार को बांग्लादेश की अंतरिम सरकार के मुखिया के रूप में शपथ ली. यूनुस के शपथ लेने के बाद भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सोशल मीडिया के जरिए उन्हें बधाई दी. इसके साथ ही पीएम मोदी ने बांग्लादेश में हिंदुओं और अन्य अल्पसंख्यकों पर हमले के विरोध में आवाज उठाई और मोहम्मद यूनुस से उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करने का भी आग्रह किया. वहीं, लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष और कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने भी मोहम्मद यूनुस को बधाई दी. लेकिन, उन्होंने बांग्लादेश में हिंदुओं और अल्पसंख्यकों के साथ हो रहे अत्याचार पर कुछ भी नहीं कहा. सिर्फ राहुल गांधी ही नहीं, बल्कि कांग्रेस के तमाम नेताओं ने भी बांग्लादेश में हिंदुओं पर अत्याचार के विरोध में एक शब्द भी नहीं बोला. हैरान, करने वाली बात ये है कि जब गाजा हवाई हमले में मुस्लिम समुदाय के लोग मारे गए तो उन्होंने खुलकर विरोध किया. मगर, जब बांग्लादेश में हिंदुओं पर अत्याचार हो रहा है, उनके घर, दुकानें और मंदिरों को नुकसान पहुंचाया जा रहा है, तब राहुल गांधी और पूरी कांग्रेस पार्टी ने मौन धारण कर रखा है.

मिर्जापुर का भौकाल गायब

भारत की सबसे ज्यादा पसंद की जाने वाली वेब सीरीज मिर्जापुर का तीसरा सीजन रिलीज हो चुका है. इस सीरीज के पिछले दो सीजन को खूब पसंद किया गया था. मिर्जापुर 2 शानदार और कई सवालों के साथ खत्म हुआ था. फिल्म में आतंक, पॉवर और गद्दी हथियाने की यह लड़ाई और भी भीषण हो चुकी है। शादी के कत्लेआम से बचकर आने के बाद मुन्ना अब खुद को अमर समझ रहा है। वहीं, गुड्डू और गोलू बदले की आग में जल रहे हैं। अखण्डानंद त्रिपाठी उर्फ़ कालीन भईया की नजरें अब राजनीतिक पॉवर तक पहुंच चुकी है। और मिर्जापुर से आगे बढ़कर यह कहानी अब लखनऊ तक पहुंच चुकी है। लेकिन सवाल एक ही है- कौन बनेगा मिर्जापुर का राजा?

इस बार गोलू और गुड्डू कुछ जय और वीरू बनते दिख रहे। गब्बर की खैनी वाला तड़का भी सीरीज में आई है। बीना के बदन की आग अब भी भड़क रही है। और, इसकी आंच में वह कुछ नए 'पकवान' भी सेंकती दिख रही हैं। डिम्पी का रोल रिवर्सल हो रहा है। वह चुप रहकर बड़ा काम करने की फिराक में हैं। शबनम की अपनी अलग दुकान सज चुकी है। पुलिस अफसर को मारने के बाद पांडेजी ने अदालत में सरेंडर कर दिया है।

पूरे 4 साल बाद 'मिर्जापुर' का सीजन तीन 5 जुलाई से 'अमेजन प्राइम वीडियो पर ही स्ट्रीम हो रहा है. इस बार भी यह सीरीज अपराध,हिंसा, खून खराबा, गाली गलौज के साथ ही सत्ता के इर्दगिर्द घूमता है, मगर इस बार फिल्मकार सत्ता परस्त हो कर 'भयमुक्त' प्रदेश बनाने की बात करने वाला यह तीसरा सीजन ले कर आए हैं और इसमें कालीन भईया या मुन्ना का भौकाल गायब है. गुड्डू पंडित व गोलू अपने ढर्रे पर हिंसा व खून खराबा को अंजाम दे रहे हैं, मगर प्रदेश की मुख्यमंत्री माधुरी यादव 'भयमुक्त' प्रदेश बनाने के लिए प्रयासरत हैं, जिस के चलते शरद शुक्ला, दद्दा व छोटे त्यागी के किरदार काफी शिथिल कर दिए गए हैं, जिस से दर्शक इत्तफाक नहीं रख पाता और वह बोर हो जाता है. मजेदार बात यह है कि इस सीरीज में प्रदेश की मुख्यमंत्री माधुरी यादव अपने राज्य के गृहमंत्री को विश्वास में लिए बगैर उनके मंत्रालय का काम भी

खुद करते हुए नजर आ रही है. क्या ऐसा ही कुछ हमारे देश में नहीं हो रहा है.

तीसरे सीजन की कहानी वहीं से शुरू होती है, जहां पर सीजन दो खत्म हुआ था. सीजन दो के अंत में हमने देखा था कि अखंडानंद त्रिपाठी उर्फ कालीन भैया और उन का बड़ा बेटा मुन्ना दोनों पर हमला होता है. मुन्ना मारा गया था, मगर किसी ने कालीन भईया को बचा लिया था. तीसरे सीजन के पहले एपीसोड में लगभग 6 मिनट में अब तक का रीकैप ही है. जिस से पता चलता है कि कालीन भईया को बचा कर शरद शुक्ला अपने साथ ले जा कर दद्दा त्यागी के अड्डे पर छिपाया है और वहीं पर उन का इलाज शुरू करवाया गया है.

फिलहाल वह कोमा में हैं. डाक्टर उन्हें कोमा से बाहर लाने के लिए प्रयासरत हैं पर कालीन भैया यानी पंकज त्रिपाठी कहां हैं, इस की खबर किसी को नहीं. माधुरी (ईशा तलवार) अपने पति मुन्ना की चिता को आग देने के बाद मुख्यमंत्री के तौर पर प्रदेश को भयमुक्त बनाने और अपने पति की मौत का बदला लेने के लिए अपने राजनीतिक हथकंडे अपना रही है. उधर गुड्डू पंडित व गोलू ने खुद को गद्दी पर बैठा लिया है. बीना त्रिपाठी (रसिका दुग्गल), और गुड्डू पंडित (अली फज़ल) मान चुके हैं कि कालीन भईया की मौत हो गई है. पर गोलू (श्वेता त्रिपाठी) अभी भी कालीन भईया की तलाश में लगी हुई है.

कहानी के केंद्र में बाहुबली अपनी ताकत दिखाने की बजाय शतरंजी चालें चलने में मगन हैं. इस सीजन में लेखक व निर्देशक वर्तमान राज्य सरकार के मुख्यमंत्री के एजेंडे को चलाने के लिए जिस तरह से कहानी को गढ़ा, उस ने 'मिर्जापुर' के भौकाल को ही मटियामेट कर डाला. मिर्जापुर की गद्दी पर बैठने के बाद गुड्डू पंडित का किरदार कई दृष्यों में बचकाना सा लगता है.

जब 'एनीमल' और 'किल' जैसी हिंसात्मक फिल्में दर्शकों के सामने हैं, तो इन फिल्मों के मुकाबले 'मिर्जापुर सीजन तीन' काफी कमजोर हो गई है. लेखकों ने तीसरे सीजन में किरदार तो भर दिए, पर किसी भी किरदार का सही ढंग से चरित्र चित्रण नहीं कर पाए. परिणामतः कहानी भी भटकी हुई लगती है. माना कि सीरीज में राजनीति, धोखा, विद्वेष, वासना और ह्यूमर सब कुछ है पर जो रोचकता होनी चाहिए थी उस का घोर अभाव है. पूरी सीरीज में पहले सीजन में जो कालीन भईया की साजिशें थी, उन का अभाव खलता रहा. निर्देशकों ने इसे अधिक यथार्थवादी बनाने के लिए लोकेशनों का चुनाव काफी अच्छा किया है. फिल्मकार ने मिर्ज़ापुर ब्रह्मांड के विस्तारित मानचित्र और पूरे पूर्वी उत्तर प्रदेश, उत्तरी बिहार और नेपाल में हुए रक्तपात को समझाने के लिए विस्तृत ग्राफिक्स का उपयोग किया है पर वह दर्शक के दिलों तक नहीं पहुंच पाते. इस सीजन में पंकज त्रिपाठी के हिस्से करने को कुछ ज्यादा रहा ही नहीं. गोलू पर निर्भर गुड्डू पंडित के किरदार में अली फजल के अभिनय का वह जलवा बरकरार नहीं रहा. पहले सीजन में शर्मीली लड़की से तीसरे सीजन में लेडी डान बन चुकी गोलू के किरदार में श्वेता त्रिपाठी भी खरी नहीं उतरती. बीना त्रिपाठी के किरदार में रसिका दुग्गल के हिस्से करने को कुछ आया ही नहीं. प्यार और बदले के बीच फंसे हुए छोटे त्यागी के किरदार में विजय वर्मा कुछ दृष्यों में प्रभावित कर जाते हैं. शरद शुक्ला के किरदार में अंजुम शर्मा का अभिनय एक जैसा ही है, उस में कहीं कोई विविधता नजर नहीं आती. जबकि शरद शुक्ला के किरदार के कई आयाम हैं. मुख्यमंत्री माधुरी के किरदार में ईशा तलवार चुक गईं. रमाकांत पंडित के किरदार मे राजेश तैलंग, राउफ लाला के किरदार में अनिल जौर्ज अपना प्रभाव छोड़ जाते हैं.

मिर्जापुर 3 अपने दोनों सीजन के तुलना में काफी कमजोर है. ऐसा लगता है कि मेकर्स ने अगले सीजन के लिए सिर्फ इस सीरीज को बनाया है. क्योंकि पूरी सीरीज में सभी किरदारों को छोटा-छोटा रोल देकर उनका परिचय करवाया गया है. जिसके चलते मिर्जापुर 3 की कहानी बहुत बार भटकी हुई भी लगने लगती हैं.

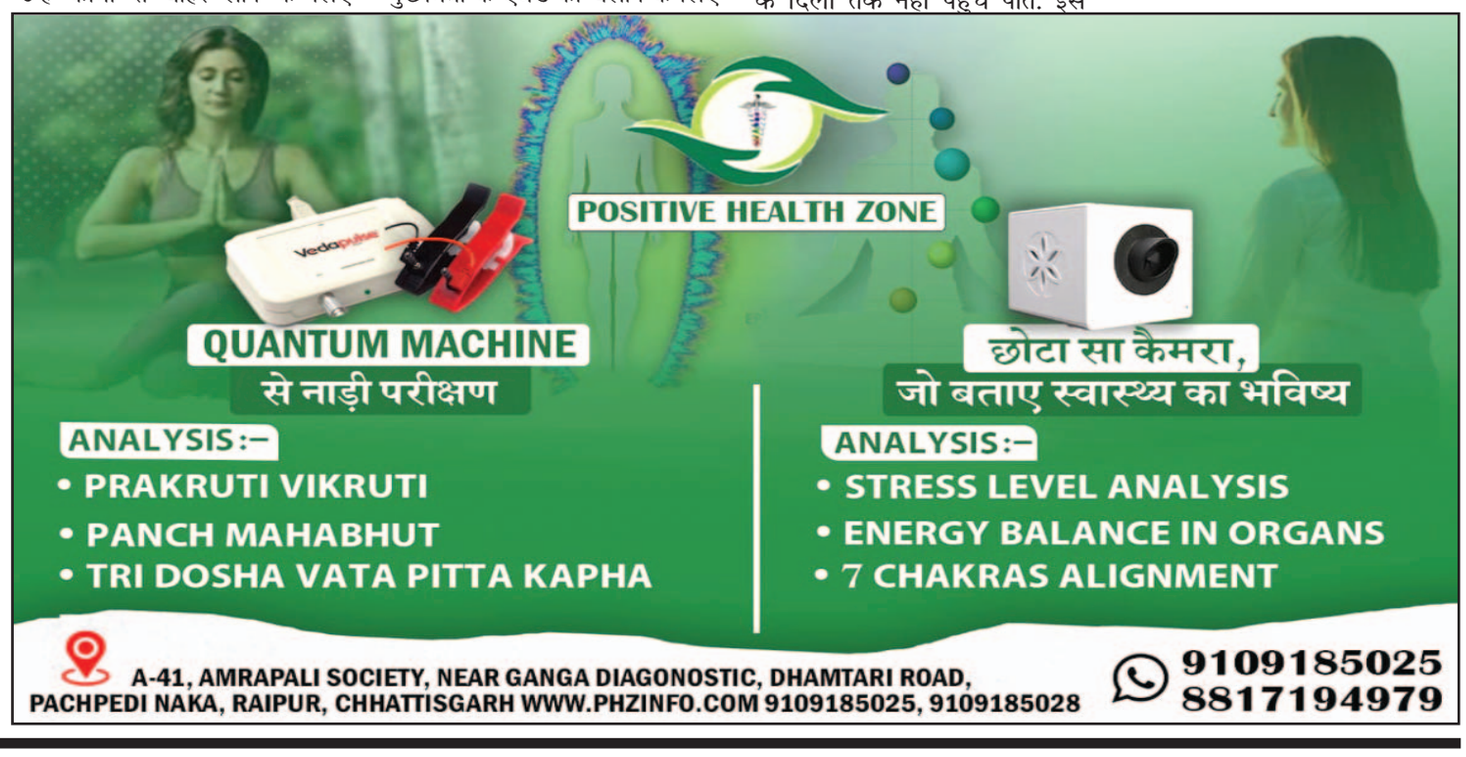

संपादकीय

अखंड भारत ही बनेगा विश्व गुरु

वर्तमान में जब कहीं से भी देश को तोडने़ की बात आती है तो स्वाभाविक रूप से उसका प्रतिकार भी जबरदस्त तरीके से होता है। यह प्रतिकार निश्चित रूप से उस राष्ट्रभक्ति का परिचायक है, जो इस भारत देश को देवभूमि भारत के रूप में प्रतिस्थापित करने का प्रमाण प्रस्तुत करने का अतुलनीय सामर्थ्य रखती है। यह आज के समय की बात है, लेकिन हम उस काल खंड का अध्ययन करें, जब भारत के विभाजन हुए। उस समय के भारतीयों के मन में विभाजन का असहनीय दर्द हुआ। जो असहनीय पीड़ा के रूप में उनके जीवन में प्रदर्शित होता रहा और देश को जगाते जगाते वे परलोक गमन कर गए। अभी तक भारत देश के सात विभाजन हो चुके हैं। जरा कल्पना कीजिए कि अगर आज भारत अखंड होता तो वह दुनिया की महाशक्ति होता। उसके पास मानव के रूप में जनशक्ति का प्रवाह होता। लेकिन विदेशी शक्तियों ने भारत के कुछ महत्वाकांक्षी शासकों को प्रलोभन देकर भारत पर एकाधिकार किया और योजना पूर्वक भारत को कमजोर करने का प्रयास किया। आज जिस भारत की तस्वीर हम देखते हैं, वह अंग्रेजों और उन जैसी मानसिकता रखने वाले लालची भारतीयों द्वारा किए गए कुकृत्यों का परिणाम ही है, लेकिन आज भी भारत में एक वर्ग ऐसा भी है, जिनकी आंखों में अखंड भारत का सपना है। उनके मन में अखंड भारत बनाने का संकल्प है। इसी संकल्प के आधार पर वे सभी इस दिशा में सार्थक प्रयास भी कर रहे हैं।

भारत के मनीषी और राष्ट्र के साथ एकात्म भाव रखने वाले महर्षि अरविंद ने विभाजन के असहनीय दर्द को आम जन की दृष्टि से देखने का आध्यात्मिक प्रयास किया। तब उनकी आंखों के सामने अखंड भारत का स्वरूप दिखाई दिया। योगीराज महर्षि अरविंद ने 67 वर्ष पूर्व 1957 में कहा था कि देर कितनी भी हो जाए, पाकिस्तान का विघटन और उसका भारत में विलय होना निश्चित है। राष्ट्र के प्रति इसी प्रकार का एकात्म भाव राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय सरसंघचालक माधव सदाशिव गोलवलकर उपाख्य श्रीगुरुजी के जीवन में भी दृष्टव्य होता रहा। वे अपने शरीर को भारत देश की प्रतिकृति ही मानते थे। जब भी देश पर कोई संकट आता था, तब उनके शरीर में वैसा ही कष्ट होता था।

विचार करने वाली बात यह भी है कि जब भारत देश के टुकड़े नहीं हुए थे, तब हमारा देश पूरे विश्व में ज्ञान का आलोक प्रवाहित कर रहा था। विश्व का सर्वश्रेष्ठ ज्ञान भारत के संत मनीषियों के पास विद्यमान था। इसलिए भारत के सिद्ध संत केवल भारत के संत न होकर जगद्गुरू के नाम से विख्यात हुए। उनकी दृष्टि में पूरा विश्व एक परिवार की तरह ही था। लेकिन ऐसा क्या हुआ कि भारत कई बार विभाजित होता रहा और आज जो भारत दिखाई देता है, वह भारत का एक टुकड़ा भर है।

भारत के विभाजन का अध्ययन किया जाए तो हमें यह भी ध्यान में रखना होगा कि यह विभाजन भारत की भूमि के टुकड़े करके ही हुए हैं। जिस भारत को हम माता के स्वरूप में पूजते आए हैं, उसे कम से कम वे लोग तो स्वीकार नहीं कर सकते, जो भारत की भक्ति में लीन हैं।

आजादी के सही मायने की तलाश में

प्रो. वीना ठाकुर

चलो स्वतंत्रता दिवस मनाते हैं, सफेद सूट पर तिरंगे में रंगा दुपट्टा या परना ओढ़ कर तिरंगा झंडा लहराते हैं, स्पीकर पर देशभक्ति के फिल्मी गीत बजाते हैं। देश भक्ति के गीतों पर हो हल्ला मचाते हैं। ओह! एक जरूरी बात तो रह ही गई कि इन सबकी फोटो सोशल मीडिया पर डाल कर अपना स्टेटस बनाते हैं। क्या वाकई बस, इतना भर ही है आजादी का मतलब और उसे मनाने का पर्व, या इससे आगे भी और बहुत कुछ है? है तो क्या हम भूलते जा रहे हैं? और फिर अगले दिन जब छोटे-छोटे तिरंगे यहां-वहां सडक़ों पर, कूड़े के ढेरों के आसपास गिरे पड़े दिखते हैं तो कई बार खुद से ही पूछना पड़ता है कि क्या हम उस आजादी को समझ पाए हैं जिसके लिए हमारे अनगिनत स्वतंत्रता सेनानी हंसते-हंसते फांसी के फंदे पर झूल गए थे, वो आजादी जिसके लिए आज भी हमारे वीर जवान सरहद पर तैनात हैं और हंसकर अपने सीने पर गोली खाकर भी वंदे मातरम् का जयघोष करते हैं। या कि आजादी का पर्व हमारे लिए मात्र मजाक बन कर रह गया है? सवाल वाजिब होने के साथ-साथ लाजिमी भी है, जो इस पर सोचा जाए तो। लेकिन इस बारे सोचना भी जरूरी है। और आगे तक इस बारे टाला नहीं जा सकता।

क्या ये वाकई आजादी ही है जहां हम अपने अधिकारों की मांग करते हुए ट्रेन, बस, इमारतों को जलाते हुए अपने देश के बारे में न सोचकर केवल और केवल इतना भर सोचते हैं कि मुझे बस, मेरे हक की लड़ाई में जीत मिलनी चाहिए, बल्कि हक से ज्यादा ही मिलनी चाहिए और वो भी सबसे पहले। उस हक की लड़ाई में भले ही मेरा देश हार जाए तो हार जाए। मुझे मेरा हक मिले, पर मुझसे कोई मेरे फर्ज की बात न करे। जहां सारे हक तो मेरे हों, पर जब देश के प्रति फर्ज की या कुछ करने की बात आए, तो उसे व्यवस्था का हवाला देकर सरकार या किसी और की तरफ घुमाया जा सके। अजीब लगता है जब हम अपने अधिकारों की बात कर कर्त्तव्यों को भूल जाते हैं। क्या हमने केवल अधिकारों के लिए आजादी पाई है? क्या केवल अपने अधिकारों की जंग लडऩा ही आजादी है? क्या हुआ अगर मेरे देश का आम नागरिक बिल्कुल हाशिए पर धकेल दिया गया है और उसकी हालत दिन पर दिन बद से बदतर होती जा रही है। ये मेरे आजाद देश का वो तबका है जिसकी वोट से लोग सत्ता के मजे लेते हुए उसे ही भूल जाते हैं क्योंकि वो और उसका वोट है भी तो इतना सस्ता कि जिसे कुछ झूठे प्रलोभनों, कुछ पैसों, कुछ कागजी स्कीमों और कई बार तो कुछ बोतलों में भी मजे से खरीदा जा सकता है। जिस लोकतंत्र में लोक मुखिया होना चाहिए, उसी लोकतंत्र में सरकार बनते ही लोक हाशिए पर चला जाता है, आखिर क्यों? कुछ अपवादों को छोड दें तो आज की राजनीति में जनता की सेवा की जगह जनता को लूटने ने ले ली है और अफसर अपनी बेलगाम अफसरशाही के अंधेरे कमरों में बंद हो रहे हैं। ऐसे में हम कहां हैं, देश कहां है और आजादी कहां? और ये जो देशभक्ति की बड़ी बड़ी बातें हो रही हैं, ऐसे में इनका अर्थ क्या रह जाता है? एक ओर जहां आम आदमी को उत्पीडऩ और अन्याय से बचाने के लिए बनाए गए पुलिस और न्याय मंदिरों से ही हो रहे उत्पीडऩ की खबरें गाहे बगाहे मीडिया की सुर्खियां बनती रहती हैं तो वहीं दूसरी ओर सरकारी दफ्तरों में फैला भ्रष्टाचार एक दर्दनाक प्यारा हादसा होकर रह गया है।

आज के इस जाति, धर्म, भाषा और ऐसे ही अन्य मतभेदों में घिरे भारत में किसी भी प्रकार के भेदभाव से मुक्त एक ऐसे भारत का सपना देख रही हूं जहां सभी आपसी सहज प्रेम और सद्भाव से रहें, जहां महिलाएं सुरक्षित हों, जहां किसी से अन्याय न हो

ईमानदारी और कर्मठता के लिए मिलने वाले ईनाम पाने के लिए लगाई जाने वाली बेईमानी और भ्रष्टाचार की दौड़ भी पूरी तरह से हमारी व्यवस्था का हिस्सा बन गई है। रिश्तों में घुली मतलब की बयार आपसी संबंधों को आज कमजोर बना रही है। ऐसा भी नहीं है कि हमने इतने सालो में कुछ भी अच्छा नहीं किया। हम कई क्षेत्रों में विश्व का नेतृत्व कर रहे हैं, हम अंतरिक्ष की यात्रा कर आए हैं। और ये सब हम देशवाशियों की दिन-रात की मेहनत, देश के प्रति कुछ कर गुजरने के जज्बे और कुशल नेतृत्व का ही कमाल है। परंतु हम इस बात को भी नजरअंदाज तो नहीं कर सकते कि पल-पल गरीब-अमीर के बीच खाई और चौड़ी होती जा रही है। हम लाख कोशिशों के बाद भी इस सत्य से मुंह नहीं मोड़ सकते कि जात-बिरादरी-धर्म-मतलबों, मजहबों में बंटे हुए समाज में रहना दिन-दिन दूभर होता जा रहा है। हम इसे भी अनदेखा नहीं कर सकते हैं कि भाषा, जाति, नस्ल और ऐसे ही अन्य मुद्दों पर धर्मनिरपेक्षता के नाम पर लड़ते रहें। किसी भी देश को आगे बढ़ाने के लिए आवश्यकता होती है कंधे से कंधा मिला कर चलने की। संकीर्ण जातीय, सांप्रदायिक, लैंगिक, भाषायी मतभेदों और निजी स्वार्थों से ऊपर उठकर आपस में मिलकर रहने की वैचारिक-राजनीतिक इच्छाशक्ति की। आपसी सद्भाव और प्यार की, देश के प्रति सच्चे लगाव की। सिर्फ कोरी जुबान से नहीं, अपितु मन की गहराइयों से इसकी माटी और भूमि को मां मानने और उसी मां के प्रति होने वाले लगाव, प्यार और चिंता के भाव की। देश को भी प्रगति और समृद्धि के पथ पर ले जाने के सपनों और संकल्पों की और उन सपनों और संकल्पों को पूरा करने के लिए हर तरह से समर्पित होने की।

77 साल बाद आज भी आजादी के मायने ढूंढने के मेरे प्रयास को कदापि मेरे निराशावादी होने का प्रमाण न मानकर मेरा आशावाद ही माना जाए कि आज के इस जाति, धर्म, भाषा और ऐसे ही अन्य मतभेदों में घिरे भारत में किसी भी प्रकार के भेदभाव से मुक्त एक ऐसे भारत का सपना देख रही हूं जहां सभी आपसी सहज प्रेम और सद्भाव से रहें, जहां महिलाएं सुरक्षित हों, जहां किसी दफ्तर में काम कराने के लिए जाते हुए जेब में रखे हुए नोट या सिफारिशी पत्र को टटोलने की जरूरत न पड़े। जहां बच्चे कमाने की मजबूरी में किसी ढाबे या किसी निर्माण स्थल पर न जाकर पढ़ाई के लिए स्कूलों में जाएं। जहां ज्ञान और मेहनत पर सिफारिश या अन्य कोई भी साधन भारी न पड़े। जहां न्याय न केवल सहज और सुलभ हो, बल्कि सबके लिए बराबर हो। मैं एक ऐसी सुबह के इंतजार में हूं जहां इन उम्मीदों को पूरा करते सपनों के भारत के लिए सामूहिक संकल्प लिए जाएं और ईमानदारी, सत्यनिष्ठा से सामूहिक प्रयास किए जाएं। बहरहाल, नई उम्मीदों के बीच समस्त भारतवासियों को स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएं। इस बार हमें उत्कृष्ट भारत के लिए संकल्प लेना होगा।

अब विकसित भारत की डगर

डा. जयंतीलाल भंडारी

इन दिनों देश के कोने-कोने में वर्ष 2047 तक भारत को विकसित देश बनाने के मद्देनजर विचार मंथन का दौर दिखाई दे रहा है। यह कहा जा रहा है कि विकसित भारत का संकल्प चुनौतीपूर्ण है, लेकिन असंभव नहीं है और भारत इसे प्राप्त कर सकता है। हाल ही में नीति आयोग के शासी निकाय की बैठक में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि विकसित देश बनाने के लिए कई अनुकूलताएं भारत के पास हैं। चूंकि यह दशक तकनीक और भू-राजनीतिक बदलाव का है, अतएव भारत को इस मौके का पूरा फायदा उठाना होगा और ऐसी नीतियां बनानी होंगी, जिससे भारत विकसित देश की डगर पर आगे बढ़े। नीति आयोग के पदेन सदस्य कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि विकसित भारत के संकल्प को पूरा करने के मद्देनजर कृषि सेक्टर की अहम भूमिका होगी। गौरतलब है कि नीति आयोग के द्वारा वर्ष 2047 तक विकसित भारत बनाने को लेकर प्रस्तुत किए गए दृष्टिकोण पत्र में कहा गया है कि 'जनसांख्यिकी, लोकतंत्र और विविधता' के तीन स्तंभों पर विकसित भारत बनाने का लक्ष्य रखा गया है। कहा गया है कि पिछले 70 वर्षों में मुश्किल से एक दर्जन मध्यम आय वाले देश ही उच्च आय वाले विकसित देश बन पाए हैं। ऐसे में विकसित भारत के लिए कई बड़े लक्ष्य की चुनौतियों के बीच भारत को विकसित देश बनाने की डगर पर आगे बढ़ा जाएगा। कहा गया है कि भारत को एक विकसित देश बनने के लिए 18000 अमेरिकी डॉलर की प्रति व्यक्ति वार्षिक आय के साथ 2047 तक 30 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर यानी करीब 30 लाख करोड़ डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने की आवश्यकता है।

एक विकसित देश के मद्देनजर विकसित भारत को महज ऐसी आर्थिक एवं वित्तीय विशेषता तक सीमित नहीं रहना होगा, वरन् विकसित भारत के मद्देनजर देश के व्यक्तियों के लिए जीवन की अच्छी गुणवत्ता का संकेत भी देना होगा और एक ऐसा सक्षम समाज बनाना होगा जो जीवंत, सांस्कृतिक रूप से समृद्ध और सामंजस्यपूर्ण हो। देश को विकसित भारत बनाने के लिए कई और महत्वपूर्ण सेवाओं और सुविधाओं की जरूरत होगी। देश में प्रत्येक नागरिक के पास गुणवत्तापूर्ण आवास, 24 घंटे शुद्ध पेयजल और बिजली आपूर्ति, हाई-स्पीड ब्रॉडबैंड और बैंकिंग सुविधाओं सहित उच्च गुणवत्ता वाली सेवाओं तक सार्वभौमिक पहुंच जरूरी होगी। देश में उच्च जीवन प्रत्याशा के साथ एक स्वस्थ जीवन और विश्व स्तरीय और सस्ती स्वास्थ्य सेवाओं तक लोगों की पहुंच जरूरी होगी। देश में सार्वभौमिक साक्षरता और बहु-विषयक, जीवन भर सीखने के साथ सभी के लिए सार्थक शिक्षा और कौशल, पूर्ण रोजगार और समृद्ध आजीविका, उद्यमशीलता के अवसरों वाले समाज का निर्माण किया जाना होगा। देश में एआई सक्षम चिकित्सा, शिक्षा और कृषि जैसी उन्नत तकनीकों सहित सभी क्षेत्रों में प्रौद्योगिकी का ज्यादा से ज्यादा इस्तेमाल होना जरूरी है। देश में सार्वजनिक परिवहन, डीपीआई और दूरसंचार सहित अत्याधुनिक बुनियादी ढांचा निर्मित किया जाना होगा। देश को वैश्विक आर्थिक विकास का चालक बनाने और वैश्विक प्रतिभा, व्यापार और पूंजी का चुंबक बनाया जाना होगा। देश के शहर और बाजार दुनिया के सबसे बड़े और शीर्ष व्यापारिक और वित्तीय केंद्रों में रेखांकित होने चाहिए। देश मैन्युफैक्चरिंग, सेवाओं, अनुसंधान और नवाचार में आगे होना चाहिए। देश में एक जीवंत ग्रामीण अर्थव्यवस्था जरूरी होगी जिसमें ग्रामीण जीवन स्तर शहरी क्षेत्रों के बराबर हो। साथ ही औसत ग्रामीण आय (कृषि और गैर-कृषि दोनों) देश की प्रति व्यक्ति आय के बराबर हो। विकसित भारत के लिए यह भी जरूरी है कि देश दुनिया के लिए एक समावेशी और लोकतांत्रिक विकास का रोल मॉडल बने, देश वैश्विक मंचों पर एक प्रमुख सदस्य बने और वैश्विक वार्ताओं और शांति के लिए उत्प्रेरक बने।

इसमें कोई दो मत नहीं हैं कि वित्तमंत्री सीतारमण के द्वारा वर्ष 2024-25 का आम बजट भी विकसित भारत के सपने को पूरा करने के मद्देनजर एक महत्वपूर्ण बजट है। इस बजट का सम्पूर्ण विश्लेषण करने के बाद दुनिया की विभिन्न प्रमुख क्रेडिट रेटिंग एजेंसियों के द्वारा नए बजट से देश के विकसित भारत की डगर पर आगे बढऩे एवं भारत की वैश्विक साख बढऩे से संबंधित प्रभावी टिप्पणियां की गई हैं। वैश्विक क्रेडिट रेटिंग एजेंसियों मूडीज, एसएंडपी, फिच आदि ने वित्त वर्ष 2024-25 के भारत के बजट की सराहना करते हुए कहा है कि इस बजट के तहत राजस्व घाटा (रेवेन्यू डेफिसिट) एवं राजकोषीय घाटा (फिस्कल डेफिसिट) कम करने की प्रतिबद्धता दिखाई गई है। निस्संदेह वैश्विक क्रेडिट रेटिंग एजेंसियों के द्वारा भारत की वैश्विक साख सकारात्मक होने की जो टिप्पणियां प्रस्तुत की गई हैं, उनके पीछे सबसे प्रमुख आधार वे प्रावधान हैं जो नए बजट को विकसित भारत के सपने को मजबूती देने वाला बजट बनाते हुए दिखाई दे रहे हैं। यद्यपि वर्ष 2047 तक विकसित भारत का लक्ष्य चुनौतीपूर्ण है, लेकिन असंभव नहीं है। भारत को विकसित देश बनाने के लिए कई बातों पर कारगर तरीके से ध्यान देना होगा। 2047 तक 30 लाख करोड़ डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने और उस समय तक 18000 डॉलर वार्षिक प्रति व्यक्ति आय के लक्ष्य को हकीकत में बदलने के लिए दो अंकों की वृद्धि लगातार बरकरार रखनी होगी। इस परिप्रेक्ष्य में हम दुनिया के कई देशों को सामने रख सकते हैं। सिंगापुर, दक्षिण कोरिया, जापान, जर्मनी जैसे देशों ने दशकों तक ऊंची विकास दर से विकसित देश के तमगे हासिल किए हैं। इन देशों के विकसित देश बनने में संस्थागत और सामाजिक बदलावों से भी बड़ी मदद मिली है। यदि हम ऐसे बदलावों की ओर देखें तो पाते हैं कि जहां सिंगापुर ने देश में व्याप्त अफसरशाही में सुधार किया, वहीं कोरिया ने अभिनव निजी-सार्वजनिक भागीदारी विकसित की है। इसी तरह जापान ने अपने सार्वजनिक क्षेत्र में नियमन और न्यायपालिका में पूरी तरह पश्चिमी उदारवादी मॉडल अपनाने की रणनीति अपनाई। भारत में भी ऐसे संस्थागत और सामाजिक बदलाव के आधार पर उच्च वृद्धि हासिल करनी होगी। देश में ऊर्जा क्षेत्र की मुश्किलें भी दूर करनी होंगी। औद्योगिक प्रतिस्पर्धा बढ़ाना होगी।

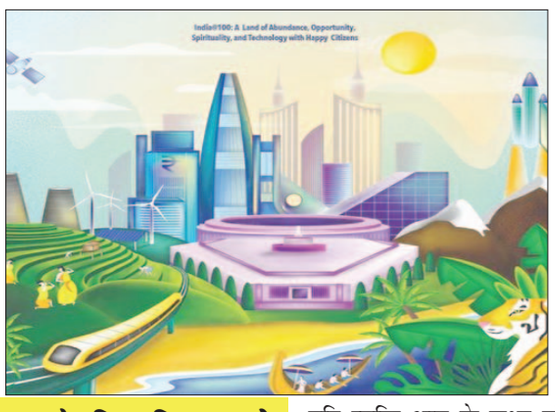

भारत के विकसित बनने संबंधी विषय पर विश्व बैंक के द्वारा एक अगस्त को प्रस्तुत रिपोर्ट भी उल्लेखनीय है। विश्व बैंक ने कहा है कि भारत को वर्ष 2047 तक विकसित देश बनाए जाने का संकल्प अत्यधिक चुनौतीपूर्ण है

ग्रामीण शहरी असमानता दूर करनी होगी। इन सबके साथ-साथ इस बात पर भी ध्यान देना होगा कि देश में इस समय जिस तरह पुरातन व्यवस्थाओं और सख्त अफसरशाही ढांचे की वजह से निर्णय प्रक्रिया में देरी होती है, उसमें व्यापक सुधार करना होगा। विकसित भारत के लिए जरूरी होगा कि कृषि के अतिरिक्त श्रम बल के लिए उद्योग और सेवा क्षेत्र में रोजगार सृजित किया जाए। अब देश में काफी समय से लंबित पड़े हुए प्रशासनिक सुधारों को अमलीजामा पहनाया जाना होगा।

देश में न्यायिक प्रक्रिया और कानून के प्रवर्तन में सुधार और सरकार की जवाबदेही सुनिश्चित करनी होगी। देश में महिलाओं को श्रम शक्ति में अधिक भागीदारी देने और अन्य सामाजिक बदलावों को लागू करने जैसे अभियानों के लिए प्रबल राजनीतिक और सामाजिक सहमति बनाई जानी होगी। यहां भारत के विकसित बनने संबंधी विषय पर विश्व बैंक के द्वारा एक अगस्त को प्रस्तुत रिपोर्ट भी उल्लेखनीय है। इसमें विश्व बैंक ने कहा है कि भारत को वर्ष 2047 तक विकसित देश बनाए जाने का संकल्प अत्यधिक चुनौतीपूर्ण है। इसके लिए भारत को मध्य आय के जाल से बाहर निकालना होगा। लगातार 7 से 10 फीसदी की विकास दर से वृद्धि करनी होगी।

हम उम्मीद करें कि सरकार 2047 तक देश को विकसित देश बनाने के संकल्प के मद्देनजर अधिक स्पष्ट रोडमैप के साथ कदम आगे बढ़ाएगी और देश के करोड़ों लोग राष्ट्र निर्माण और आत्म विश्वास की उच्च भावनाओं से परिपूर्ण होकर देश को विकसित देश बनाने में अपना हरसंभव योगदान देते हुए दिखाई देंगे। नागरिकों की सहभागिता से ही देश को विकसित राष्ट्र बनाया जा सकता है।

आप ही आपकी आखिरी उम्मीद हैं

हमें यह समझने की जरूरत है कि दूसरों से पहले हमारा खुद के साथ एक रिश्ता है, जिसका मजबूत होना बेहद जरूरी है। क्योंकि बुरे समय में जब सब साथ छोड़ देते हैं, तब हम ही खुद की आखिरी उम्मीद होते हैं। खुद के साथ हमारा यह मजबूत रिश्ता ही हमें आगे बढ़ने की उम्मीद और हौसला देता है।

हम हमारी पहली और आखिरी उम्मीद हैं। हम अपने पार्टनर के साथ अपने रिश्ते को मजबूत करने में इतना व्यस्त रहते हैं कि खुद के साथ अपने रिश्ते को महत्त्व देना भूल जाते हैं। हमें यह समझने की जरूरत है कि दूसरों से पहले हमारा खुद के साथ एक रिश्ता है, जिसका मजबूत होना बेहद जरूरी है। क्योंकि बुरे समय में जब सब साथ छोड़ देते हैं, तब हम ही खुद की आखिरी उम्मीद होते हैं। खुद के साथ हमारा यह मजबूत रिश्ता ही हमें आगे बढ़ने की उम्मीद और हौसला देता है।

इसलिए दूसरों से पहले खुद के साथ के अपने रिश्ते को मजबूत करें। खुद को समय दें, अपने शौक को पूरा करें, आत्म-साक्षात्कार करें, और अपनी भावनाओं को समझें। जब हम खुद को समझने और स्वीकारने लगते हैं, तो हम अंदर से मजबूत होते हैं और जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार रहते हैं। इस तरह खुद के साथ एक मजबूत रिश्ता बनाना हमारे मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य के लिए बेहद महत्वपूर्ण है। चलो जानते हैं कैसे खुद से एक मजबूत रिश्ता बनाएं और अपनी जिंदगी को और बेहतर बनाएं।

रिलेशनशिप एक्सपर्ट तालिया कोरेन ने कहा कि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप सिंगल हैं या किसी रिलेशनशिप में हैं, खुद के साथ अपने रिश्ते पर काम करना बहुत ज़रूरी है। ऐसा करने से खुद को मिले फायदों के बारे में बताते हुए कोरेन ने लिखा, %मुझे हर किसी से प्यार की ज़रूरत नहीं है, जो बहुत आज़ादी देता है। मुझे अपने लिए सही फ़ैसले लेने के लिए दोस्तों/परिवार/समाज से अनुमति की ज़रूरत नहीं है। मैं संघर्ष में ज़्यादा सुरक्षित महसूस करती हूँ, क्योंकि मैं खुद ही सुरक्षित आधार हूँ। मैं भावनात्मक प्रसंस्करण के लिए अपने दोस्तों पर कम निर्भर करती हूँ और बहुत कुछ खुद ही कर सकती हूँ (सब नहीं)। मेरा दिमाग़ ज़्यादा सुरक्षित जगह है और मैं खुद के प्रति ज़्यादा दयालु हूँ। मुझे अकेले रहने और अकेले काम करने में कोई आपत्ति नहीं है। मुझे पता है कि मैं चाहे जो भी हो, ठीक रहूँगी। आत्मविश्वास आसानी से आता है।%

खुद की आलोचना करना बंद करें- आप अपने मन में खुद से कैसे बात करते हैं? बहुत से लोग अपने ही प्रति आलोचनात्मक रवैया अपनाते हैं, जो नहीं करना चाहिए। खुद की आलोचना बंद करने का समय आ गया है। आप अपने प्रति थोड़े दयालुयता दिखाएं और दयालु विचारों के साथ सक्रिय रूप से आलोचनाओं का सामना करें।

खुद का आत्म-विश्वास बढ़ाने के लिए कदम उठाएं- आप जितना ज़्यादा खुद पर भरोसा करेंगे, उतना ही भरोसा आपको अपने फैसलों पर होगा। जैसे-जैसे आपको अपने आप और फैसलों पर होता जाएगा असुरक्षा की भावना उतनी ही कम होती जाएगी। खुद का आत्म-विश्वास बढ़ाने के लिए जोखिम उठाने की कोशिश करें। छोटे से शुरू करें और फिर धीरे-धीरे बड़े जोखिम लें। अपने दोस्तों, परिवार आदि की राय या निर्देश के बिना फैसले लेने की कोशिश करें।

आई और माइंड दोनों को हेल्दी रखना ज़रूरी–डॉ अनिल गुप्ता

नेशनल कॉलेज नुआपाड़ा में नेत्र शिविर

रायपुर। वर्तमान समय में गैजेट के तरफ हमारी निर्भरता बढती जा रही . हम पल भर भी खुद मोबाइल आदि से दूर नहीं रख पाते . हश्र यह हो रहा है कि लोगो की आँखों की दृष्टि के साथ जीवन के प्रति दृष्टिकोण भी कमजोर हो रहा है. बच्चे और छात्र ज्यादा प्रभावित हो रहे है . ऐसे में जितना जरुरी नेत्र परिक्षण कराना है उतना ही जरुरी है माइंड को हेल्दी रखना.

उक्त बातें नुआपाड़ा खरियार, ओडिशा में नेशनल कॉलेज में चेम्बर ऑफ कॉमर्स के द्वारा आयोजित होलिस्टिक हेल्थ सेमिनार एवं नेत्र जांच शिविर की दौरान श्रीगणेश विनायक हॉस्पिटल रायपुर के डायरेक्टर डॉ अनिल गुप्ता ने कही .

चैम्बर ऑफ़ कॉमर्स और नेशनल कॉलेज नुआपड़ा के संयुक्त तत्वावधान मेंश्री गणेश विनायक आई हॉस्पिटल,रायपुर की टीम द्वाराकॉलेज के छात्रों, लेक्चरर्स, और प्रोफेसर्स सहित लगभग 150 से अधिक लोगो ने अपनी आँख की जाँच कराये । पाजिटिव हेल्थ जोन रायपुर की संस्कृति सिंह द्वारा छात्राओ को स्वस्थ शरीर के साथ आने वाली चुनतियों का कैसे सामना करने के बारे में मोटीवेट कियाएवं बताया कि हमें स्वस्थ रहने के लिए हेल्दी डाईट लेनी चाहिए , पर्याप्त पानी समय समय पर लेते रहना चाहिए एवं जहां तक हो सके जंक फूड से दूर रहे है .

चैम्बर ऑफ़ कॉमर्स द्वारा कॉलेज के ज़रूरतमंद बच्चो को रेनकॉट वितरित किया गया. साथ ही चैम्बर ऑफ़ कमर के प्रेसिडेंट संदीप शर्मा एवम् सचिव प्रेम साहू द्वारा कॉलेज में पढ़ रही मेधाबी छात्रा कुंती माझी जो बचपन से बिना दोनों हाथ के पढ़ाई कर रही है उसकी Higher एजुकेशन (ग्रेजुएशन) की दो वर्ष का कॉलेज फी प्रिंसिपल के पास जमा करवाया गया और उनकी उजवाल भविष्य की कामना किए।

फिर दिखा सेक्युलरिज्म का विकृत चेहरा

राजीव सचान

बांग्लादेश में शेख हसीना सरकार के खिलाफ छेड़े गए आंदोलन के दौरान ही हिंदुओं और अन्य अल्पसंख्यकों पर हमले शुरू हो गए थे। 5 अगस्त को जैसे ही शेख हसीना ने ढाका छोड़ा, उन पर हमलों का सिलसिला और तेज हो गया। उनके घरों, दुकानों और पूजा स्थलों को भी निशाना बनाया जाने लगा। यह सिलसिला वहां अंतरिम सरकार स्थापित होने के बाद भी कायम रहा।

बांग्लादेश में शेख हसीना सरकार के खिलाफ छेड़े गए आंदोलन के दौरान ही हिंदुओं और अन्य अल्पसंख्यकों पर हमले शुरू हो गए थे। 5 अगस्त को जैसे ही शेख हसीना ने ढाका छोड़ा, उन पर हमलों का सिलसिला और तेज हो गया। उनके घरों, दुकानों और पूजा स्थलों को भी निशाना बनाया जाने लगा। यह सिलसिला वहां अंतरिम सरकार स्थापित होने के बाद भी कायम रहा। चूंकि खुद पुलिसकर्मियों और थानों पर हमले हो रहे थे, इसलिए हिंदुओं और अन्य अल्पसंख्यकों की सुध लेने वाला कोई नहीं था।

बांग्लादेश में तख्तापलट के बाद कुछ दिनों त्तक वहां हिंदुओं पर हमलों को लेकर चिंता जताने का काम केवल भाजपा, आरएसएस और अन्य हिंदू संगठनों के नेता ही कर रहे थे। हालांकि 6 अगस्त को ही विदेश मंत्री जयशंकर सर्वदलीय बैठक और संसद में यह बता चुके थे कि बांग्लादेश में हिंदुओं और अन्य अल्पसंख्यकों पर हमले हो रहे हैं, लेकिन विपक्ष के किसी नेता ने इस पर चिंता जताने की जरूरत नहीं समझी। जब अंतरिम सरकार के प्रमुख के रूप में मुहम्मद यूनुस ने सत्ता की बागडोर संभाल ली और खुद उन्होंने अल्पसंख्यकों की रक्षा करने की अपील की, तब भारत में कुछ विपक्षी नेताओं को यह लगा कि अब उन्हें भी बांग्लादेश के अल्पसंख्यकों पर कुछ बोलना चाहिए। उनके सामने तब और कोई चारा नहीं रह गया, जब खुद बांग्लादेश के हिंदू खुद को बचाने की गुहार लगाते हुए सड़कों पर उतर आए और इसी के साथ दुनिया के कई देशों में उन्हें बचाने की मांग को लेकर प्रदर्शन हुए। इस तरह करीब एक सप्ताह की चुप्पी के बाद कई विपक्षी नेताओं की बांग्लादेशी हिंदुओं को लेकर जुबान खुली। क्यों, क्योंकि तथा कथित सेक्युलरिज्म इसकी इजाजत नहीं दे रहा था कि वे उन पर कुछ बोलें। यह पहली बार नहीं हुआ।

अफगानिस्तान हिंदुओं एवं सिखों से करीब–करीब खाली हो गया और उन्हें जैसे–तैसे निकालकर लाया गया, लेकिन शायद ही कभी कोई आवाज उठी हो कि तालिबान शासन में बचे–खुचे हिंदू–सिखों को बचाने की जरूरत है। पाकिस्तान में आए दिन हिंदुओं, सिखों का उत्पीड़न ' और खासकर उनकी लड़कियों का अपहरण एवं जबरन निकाह होता रहता है, लेकिन मजाल है कि खुद को सेक्युलर बताने वाले किसी दल का नेता इसके खिलाफ आवाज उठाए। कारण वही कि छद्म सेक्युलरिज्म इसकी इजाजत नहीं देता। यह भी ध्यान रखें कि जब अयोध्या से गुजरात जा रहे करीब साठ कारसेवकों को गोधरा में ट्रेन में जिंदा जला दिया गया था तो विपक्षी नेताओं के मुख से निंदा के दो शब्द नहीं निकले थे और उलटे यह साबित करने की कोशिश की गई थी कि ट्रेन में आग बाहर से नहीं, अंदर से लगी। गोधरा कांड पर विपक्षी दलों की चुप्पी ने भी गुजरात दंगों की आग में घी डालने का काम किया था। यह भी किसी से छिपा नहीं कि कश्मीरी हिंदुओं के पक्ष में कभी कोई आवाज नहीं उठती। उनके पलायन के इतने वर्षों बाद भी यह सवाल नहीं उठता कि आखिर कश्मीरी हिंदू अपने घर कब लौट सकेंगे? यदा–कदा इस तरह का नैरेटिव गढ़ने की कोशिश अवश्य की जाती है कि कश्मीरी हिंदू अपने पलायन के लिए खुद ही जिम्मेदार हैं।

सेक्युलरिज्म के विकृत रूप लेने के कारण ही देश में अपने–अपने एजेंडे के हिसाब से पीड़ितों के पक्ष में बोला जाता है। इसका उदाहरण यह है कि जो लोग गाजा में मुसलमानों के संकट पर बोलना जरूरी समझते हैं, वे बांग्लादेशी हिंदुओं के पक्ष में आवाज उठाने को गैर जरूरी मानते हैं। जब बांग्लादेश में हिंदुओं पर हमले हो रहे थे, तब देश में यह भी हो रहा था कि इंटरनेट मीडिया पर इन हमलों को नकारने और साथ ही यह बताने की पूरी कोशिश हो रही थी कि वे वहां पर पूरी तरह सुरक्षित हैं। इसके लिए एक्स की कुछ उन फर्जी पोस्ट का सहारा लिया जा रहा था, जिनमें यह कहा जा रहा था कि वह खुद बांग्लादेशी हिंदू हैं और पूरी तरह सुरक्षित हैं। इसके अतिरिक्त उन चंद फोटो का भी हवाला दिया जा रहा था, जिनमें बांग्लादेश के मुस्लिम मंदिरों की सुरक्षा करते दिख रहे थे।

दुनिया में जब कहीं बड़े पैमाने पर हिंसा होती है तो कुछ फेक फोटो और वीडियो भी आ जाते हैं। ऐसा ही बांग्लादेश में हिंदुओं पर हमले को लेकर भी हुआ। इन्हें ढाल बनाकर यह माहौल बनाने की हरसंभव कोशिश हुई कि हिंदुओं पर हमले की सारी खबरें झूठी हैं। यह काम तथाकथित फैक्ट चेकर भी कर रहे थे

बाबाओं पर कृपावंत देश की अदालतें

राकेश अचल

आजकल देश की अदालतें बाबाओं पर कृपावनत हैं। मैं देश की अदालतों का दिल से सम्मान करता हूँ , क्योंकि इसके अलावा कोई और विकल्प है ही नहीं। देश की अदालतों की उदारता और देश के कानूनों की उपस्थिति का ही नतीजा है कि हत्या, बलात्कार और यहां तक कि अदालतों की अवमानना के आरोपी बाबाओं पर अदालतों की कृपा बरस रही है। समस्या ये है कि अदालतें बाबाओं पर कृपा न बरसायें तो क्या करें ? अदालतें बाबाओं को सजा तो पहले ही सुना चुकी हैं, अब बारी कृपा की है।

ताजा खबर है कि हत्या और बलात्कार के मामलों में सजा–याफ्ता डेरा प्रमुख गुरमीत सिंह मंगलवार सुबह रोहतक की सुनारिया जेल से सातवीं बार 21 दिन की फरलो पर बरनावा आश्रम पहुंच गया। उसके साथ हनीप्रीत व परिवार के सदस्य भी आए हैं। दुष्कर्म व हत्या के मामले में उम्र कैद की सजा काट रहे डेरा प्रमुख गुरमीत सिंह को रोहतक की सुनारिया जेल से हरियाणा पुलिस सुरक्षा में लेकर सुबह निकली। जनपद में प्रवेश पर बागपत पुलिस प्रशाशन ने उसे सुरक्षा दी। बरनावा डेरा आश्रम के मुख्य द्वार पर पुलिस फोर्स को तैनात किया गया।

बाबा राम–रहीम पर अदालतों के साथ ही राम जी भी मेहरवान दिखाई देते हैं, अन्यथा दिल्ली के मुख्यमंत्री मनीष सिसौदिया को 17 महीने बाद जमानत मिली। मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को तो जमानत भी नहीं मिली। मुमकिन है कि यदि ये दोनों सजायाफ्ता होते तो इन्हें भी सात–आठ बार फरलो की सुविधा मिल जाती। लेकिन अपना–अपना नसीब है। सबका नसीब एक जैसा नहीं होता। हो भी नहीं सकता। होना भी नहीं चाहिए, नही तो सब गड़बड़ हो सकता है।

सन 2024 में इन बाबाओं की किस्मत जागती दिखाई दे रही है। एक नाबालिग सेविका से बलात्कार के मामले में उम्रकैद की सजा काट रहे आसाराम को मंगलवार को कोर्ट ने पहली बार उनकी सात दिन की पैरोल को मंजूर कर लिया है। यह पैरोल कोर्ट ने आसाराम को स्वास्थ्य कारणों से दी है। हाईकोर्ट के जस्टिस पुष्पेंद्र सिंह भाटी की कोर्ट ने उसे इलाज के लिए महाराष्ट्र के माधोबाग जाने की इजाजत दी है। पैरोल के दौरान आसाराम पुलिस हिरासत में रहेगा। बता दें कि आसाराम की ओर से पहले भी इलाज के लिए पैरोल की अर्जी दी जा चुकी है, लेकिन हर बार उसे खारिज कर दिया गया था। आसाराम पिछले 11 साल से जमानत का इन्तजार कर रहे हैं। वे गुनाहगार हैं लेकिन बाबा राम–रहीम के मुकाबले कम, इसलिए उनके सफेद बाल देखकर मै उन्हें बाबा ही कहता हूँ।

देश के एक और खुशनसीब बाबा स्वामी रामदेव और उनके शिष्य आचार्य बालकृष्ण हैं। भ्रामक विज्ञापन मामले में बाबा रामदेव और आचार्य बालकृष्ण को सुप्रीम कोर्ट से राहत मिल गई है। कोर्ट ने दोनों के माफीनामा को स्वीकार कर लिया है। इसके साथ ही सुप्रीम कोर्ट ने अवमानना से जुड़ा यह केस बंद कर दिया है। बता दें कि सुप्रीम कोर्ट में बाबा रामदेव ने माफीनामा पेश कर भविष्य में भ्रामक विज्ञापन नहीं देने का वादा किया था।14 मई को शीर्ष अदालत ने अवमानना नोटिस पर अपना आदेश सुरक्षित रख लिया था। ये बाबा श्रृंगी ऋ षि की तरह पुत्र प्राप्ति यज्ञ नहीं कराते लेकिन पुत्र पैदा होने की दवा जरूर बनाते और बेचते थे।

बाबाओं की किस्मत से देश के नेताओं को जलन हो सकती है, और ये स्वाभाविक भी है। नेता बाबा नहीं होते और बाबा नेता हो सकते हैं। उत्तरप्रदेश में मुख्यमंत्री के पद पर एक बाबा जी ही विराजमान है। उनका वाहन बुलडोजर हैं । वे जिसका घर बुलडोज कर सकते हैं और जिसे चाहे अभयदान दे सकते है। आपको याद होगा कि देश के चार बड़े बाबाओं ने पिछले महीनों में देश की सर्वशक्तिमान सरकार के खिलाफ बगावत कर दी थी। ये चारों बाबा देश के शंकराचार्य कहे जाते हैं। कहे क्या जाते हैं बल्कि हैं। ये सरकार से नाराज हो सकते हैं लेकिन सरकार चलवाने वालों से नाराज नहीं होते। आपने देखा होगा कि इन चार में से 3 बड़े वाले बाबा यानि शंकराचार्य ए–1 के बेटे की शादी के आशीर्वाद समारोह में अपने दंड–कमंडल के साथ मौजूद थे।

देश का क़ानून दुर्भाग्य से सबके लिए एक है । बाबाओं के लिए भी वो ही क़ानून काम करता है जो क़ानून भ्रष्ट नेताओं के लिए काम करता है। क़ानून की दहलीज पर भ्रष्ट आये या ईमानदार उसे सबकी सुनना पड़ती है। ये भारत का ही क़ानून है जो लोकसभा में विपक्ष के आज के नेता राहुल गांधी की सदन द्वारा छीनी गयी सदस्यता वापस दिलाता है। ये देश की अदालतें ही हैं जो इलेक्टोरल बांड के जरिये की गयी कमाई को असंवैधानिक बताती हैं लेकिन इसके इस्तेमाल पर रोक नहीं लगातीं। क़ानून की और अदालत की अपनी दृष्टि होती है। उसे हर स्तर पर चुनौती देने का इंतजाम भी है। लेकिन अंतिम पायदान पर पहुँचने के बाद अदालत के किसी भी फैसले को चुनौती नहीं दी जा सकती । हाँ सरकार के पास एक विद्या है जिसके जरिये वो किसी भी छोटी–बड़ी अदालत के फैसले को निष्प्रभावी करने के लिए नया क़ानून बना सकती है।

जीवन के चौथेपन में टूटते रिश्ते

ग्रे डाइवोर्स का अर्थ बताया जाता है कि जब पति–पत्नी 50 की उम्र के बाद अलग हों यानी जब बालों में सफेदी छाने लगे। हालांकि जो लोग ऐसा करते हैं, उनकी राह भी आसान नहीं होती। बहुत बार जमीन–जायदाद का फैसला करना मुश्किल हो जाता है, जो संयुक्त होती है या बैंक खाते संयुक्त होते हैं। इसके अलावा बड़े बच्चे भी माता–पिता के इस तरह से अलग होने को सह नहीं पाते।

क्षमा शर्मा

बहुत समय से एक नामचीन नायक–नायिका के तलाक की खबरें इंटरनेट मीडिया पर छाई हुई हैं। लोग दावा कर रहे हैं कि बस ऐसा होने ही वाला है। सच क्या है, कहा नहीं जा सकता, लेकिन ग्रे डाइवोर्स यानी कि विवाह के दशकों बाद पति–पत्नी का अलग हो जाना, इन दिनों बेहद चलन में है। महिलाएं कह रही हैं कि एक खराब रिश्ते में जीवन बिताने से अच्छा है कि जब मौका मिले, अलग हो जाएं। इस लेखिका ने कई स्त्रियों को खुद देखा है। कई साल पहले यह लेखिका जिस संस्थान में काम करती थी, वहां एक महिला आई। उसे काम चाहिए था। उसकी उम्र उस समय 50 वर्ष रही होगी। उसका कहना था कि पति बहुत तंग करते हैं। सुबह शाम मारपीट, हर रात शराब पीकर आना है। वह महिला उच्च शिक्षित भी थी, लेकिन नौकरी नहीं करती थी। वह सब कुछ इतने साल इसलिए सहन करती रही कि अपने बेटे के बड़े होने का इंतजार कर रही थी। अब वह अपने पांवों पर खड़ा होना चाहती थी। उसी समय के आसपास एक वरिष्ठ महिला पत्रकार ने अपने बहुत मशहूर पति से अलग होने पर पार्टी दी थी और अपनी आजादी का जश्न मनाया। यह कोई नई–अनोखी बात नहीं कि अब तलाक की भी पार्टी होने लगी हैं। लोग उसका जश्न मनाने लगे हैं।

ग्रे डाइवोर्स का अर्थ बताया जाता है कि जब पति–पत्नी 50 की उम्र के बाद अलग हों यानी जब बालों में सफेदी छाने लगे। हालांकि जो लोग ऐसा करते हैं, उनकी राह भी आसान नहीं होती। बहुत बार जमीन–जायदाद का फैसला करना मुश्किल हो जाता है, जो संयुक्त होती है या बैंक खाते संयुक्त होते हैं। इसके अलावा बड़े बच्चे भी माता–पिता के इस तरह से अलग होने को सह नहीं पाते। कई बार बच्चे माता–पिता को इसके लिए प्रेरित भी करते हैं। एक लड़के ने जीवन भर अपनी मां को पिता के हाथों प्रताड़ित होते देखा। बड़े होने पर उसने मां से कहा कि इतना अपमान सहने से बेहतर है कि वे दोनों अलग हो जाएं। फिल्मी दुनिया में भी जहां अक्सर पति–पत्नी एक खुशहाल परिवार की तस्वीर पेश करते हैं, वहां भी ऐसा हो रहा है। इसमें फरहान अख्तर–अधुना भबानी, अरबाज खान–मलाइका अरोड़ा, ईशा देओल भरत तख्तानी, सोनम खान– राजीव राय, किरण राव–आमिर खान, रितिक रोशन–सुजैन खान, अर्जुन रामपाल–मेहर जेसिया जैसे जोड़े शामिल हैं। इन सबके बड़े–बड़े बच्चे भी हैं।

किरण राव ने कुछ दिनों पहले साक्षात्कार में कहा था कि आमिर से उनके संबंध बहुत मधुर हैं। तलाक ने उन्हें आजादी दी है। वह खुद के

महत्व को पहचानना चाहती थीं। अपने तलाक पर अर्जुन रामपाल ने इससे बिल्कुल अलग बात की। उन्होंने कहा था कि तलाक बहुत आसान नहीं होता। यह आपके अकेलेपन को बढ़ाता है। जितने भी फिल्मी जोड़े एक–दूसरे से अलग हुए हैं, वे अपने पूर्व साथी के बारे में अच्छी बातें करते हुए यह भी कहते हैं कि वे दोनों सबसे अच्छे दोस्त हैं। फिल्मकार अनुराग कश्यप जब कल्कि कोचलीन से अलग हुए तो कुछ दिन बाद उन्होंने कहा था कि जब वे दोनों साथ थे, तो हमेशा लड़ते रहते थे, मगर अब दोनों में खूब मित्रता है। कश्यप इससे पहले भी अपनी पत्नी से अलग हो चुके थे। बहरहाल, ये जोड़े यह भी कहते हैं कि जिस साथी से अलग हुए, वह बहुत अच्छा इंसान है। क्या यह सोचकर आश्चर्य नहीं होता कि यदि कोई इतना अच्छा इंसान और मित्र है, तो फिर अलग क्यों होना पड़ा? शायद इसका जवाब किसी के पास नहीं होता।

न्यू रिसर्च ने अमेरिका में ग्रे डाइवोर्स पर एक अध्ययन किया। इसमें बताया गया कि पिछले दो दशकों में तलाक के सारे मामलों में 40 प्रतिशत मामले ऐसे थे, जिनमें 50 और उससे ऊपर के जोड़े शामिल थे। 1990 के बाद इनकी संख्या दोगुनी हो गई और अब जो लोग 65 से ऊपर हैं, उनकी संख्या तिगुनी हो गई है। विशेषज्ञ कहते हैं कि जब तक लोग अपने बच्चों को पालते हैं, तब तक वे किसी तरह साथ रह लेते हैं, मगर जैसे ही बच्चे बड़े होते हैं, उनका अपना घर और परिवार होता है, तो पति–पत्नी को लगता है कि अब उन्हें एक–दूसरे की जरूरत नहीं रही। इसके अलावा अपने देश में स्त्रियों के प्रति जो हिंसा है, उसे शायद वह बच्चों के कारण झेलती रहती हैं, लेकिन आज की स्त्रियां पांच दशक पहले की स्त्रियां नहीं हैं, जो किसी भी बुरे संबंध को समाज के डर से निभा लेती थीं। आज वे पहले की तरह से अपने पति पर निर्भर नहीं हैं। निर्णय लेने की उनकी क्षमता बढ़ी है। इसलिए वे भी तलाक की पहल करती हैं और बुरे रिश्ते से आजादी चाहती हैं, लेकिन यह बात भी सच है कि बच्चों पर इसका बुरा असर पड़ता है। मेरे दफ्तर आई उसी महिला के लड़के ने एक बार कहा था कि आप ही बताइए, मैं किधर जाऊं। मुझे तो अपने माता–पिता दोनों से प्यार है। मैं एक से मिलने जाता हूं तो दूसरा बुरा मानता है।

हालांकि इस मामले में फिल्मी दुनिया के लोग अक्सर अपने बच्चों पर इस तरह का प्रतिबंध नहीं लगाते। जब वे अलग होते हैं तो कहते हैं कि अपने बच्चों के लिए वे दोनों हमेशा, हर स्थिति में मौजूद रहेंगे, लेकिन आम लोगों की दुनिया में ऐसा नहीं हो पाता। कड़वाहट इतनी ज्यादा होती है कि वे एक–दूसरे की शक्ल भी नहीं देखना चाहते। यह भी देखा गया है कि बहुत से जोड़े अलग होने के बाद फिर से साथ रहने लगते हैं। इसके पीछे यह सच भी है कि जीवन के चौथेपन में आपको साथी और साहचर्य भाव की जरूरत सबसे ज्यादा होती है, क्योंकि बच्चे अपनी–अपनी राह चले गए होते हैं। शायद इसीलिए कुछ लोग वापस लौटकर अपना जीवन फिर से शुरू करते हैं।

रोगी,रोग और परेशानियों के बीच भी जो मुस्कुरा सके वही योद्धा है

डॉ . शशिकान्त सिंह राजपूत
मनोरोग विशेषज्ञ
रायपुर

चाहे हम कोई भी हो अपने जीवन काल में कभी ना कभी देखभाल कर्ता बनेंगे ही तो ऐसे में ज़रूरी है कि हम सब थोड़ा सा अपने आप को रोगी, रोग, उपचार के हिसाब से खुद को ढाल ले।

स्वास्थ्य एक बड़ी चुनौती किसी भी देश के लिये,बढ़ती आबादी और चिकित्सा जगत में आधुनिक अनुसंधान से जटिल से जटिल,बीमारियों का उपचार अब संभव है और इसके चलते रोग ग्रस्त लोगो की जनसंख्या में पिछले कुछ दशक से तेज़ी से वृद्धि हुई है।

इस संदर्भ में आज हम उन लोगों पर चर्चा करना अति महत्वपूर्ण हो जाता है,जो अस्पताल और रोगी के मध्य एक अहम कड़ी है, वो जो रोगी की देखभाल करता है यानी की 'देखभालकर्ता' (Caregivers)। भारत में आज भी अधिकांश देखभाल कर्ता घर परिवार के सदस्य होते है । बड़े बड़े शहरों में जहाँ परिवार के लोग ऑफिस या अपने काम को नहीं छोड़ पाते वे लोग बाहर के लोग अपने परिजन के देखभाल के लिये रखते है।देखभालकर्ता कोई भी हो सकता है,कही बड़े लोग होते है तो कही छोटे बच्चे भी ये भूमिका ज़िम्मेदारी से निभाते है।

आज शायद ही कोई ऐसा घर ही हमारे देश में जहाँ कोई बिमार व्यक्ति ना हो ! बिमार व्यक्ति को हम दो श्रेणी में बाँट सकते है एक जो OPD स्तर पर उपचार करा रहे है और दूसरा जो अस्पताल में भर्ती होकर अपना इलाज करा रहे है। अब चाहे रोगी भर्ती हो या ओपीडी पर दिखा रहे हो दोनों जगह पर देखभाल कर्ता की भूमिका अहम है।

बैंकों भी रोग को ठीक करने में एक चिकित्सक,पैथोलॉजी जाँच या अन्य जाँच,दवाईया,या कोई भी चिकित्सकीय प्रक्रिया की जितनी आवश्यकता होती है,उतना ही महत्वपूर्ण भूमिका एक देखभालकर्ता की होती है किसी भी बिमारी या बिमार व्यक्ति को स्वस्थ करने में। अधिकांश बिमारी 2 से 3 सप्ताह में ठीक हो जाती है फिर चाहे वो ओपीडी मरीज़ हो या भर्ती मरीज़, परंतु कुछ बिमारी जैसे कैंसर, हृदय संबंधित, मानसिक रोग, त्वचा रोग,जोड़ –हड्डी रोग, नशा से हुई बीमारियाँ,नस–स्नायु संबंधित रोगो के उपचार में समय सामान्य से अधिक लगता है। ऐसे रोगी में कई बार मरीज़ को बार बार अस्पताल में भर्ती करना पड़ता है। ऐसे जगह पर जहाँ रोग का इलाज धीरे से हो रहा है या जहाँ बार बार भर्ती करना पड़ रहा हो वहाँ पर देखभाल कर्ता अपने ही स्वास्थ के साथ लापरवाही करते नज़र आते है । जैसे भरपूर नींद ना लेना, खानपान में ऊँचनीच होना, व्यर्थ की चिन्ता करना अटकलें लगाना, जिसके कारण इनके मानसिक दशा में बदलाव आना जैसे चिड़चिड़ापन, अस्पताल कर्मियों से बहस हो जाना, अत्यधिक थकान लगना, पेट का गड़बड़ होना इत्यादि।

तो ऐसे में इस अहम ज़िम्मेदारी निभाने वाले के संदर्भ में बात करना आज के माहौल के लिये अति आवश्यक हो चुका है।क्योंकि देखभालकर्ता का स्वभाव का असर रोगी के स्वास्थ पर असर डालता है।

ऐसे में देखभालकर्ता को अपने रोगी के समक्ष बोलने से पहले अपने शब्दों पर ध्यान देना चाहिये, आप कितना भी परेशान क्यों ना हो मरीज़ के सामने चुभने वाली बाते या घर के समस्याओं के बारे में ज़िक्र ना करे,अपना बॉडी लैंग्वेज सही रखे, इन सब का असर मरीज़ के ठीक होने पर पड़ता है ।

ऐसे में ज़रूरत है की देखभाल कर्ता सर्वप्रथम रोग के बारे में अच्छे से समझ लेवे ताकि उसके अनुरूप वो अपना दिनचर्या को सही से बना सके। ऐसे समय पर स्वयं का ध्यान देना स्वार्थी होने के अपराध बोध को जगाता है हो कि सरासर गलत है आप स्वस्थ रहेंगे तभी तो बाक़ी काम भी सरलता से होगा। तो समय समय पर पानी पिजिये खाना नाश्ता को अनावश्यक ना टालें,।

बेवजह बहुत सारे सवाल पूछने से बचे क्योंकि दवाईयो का असर आने में समय लगता है जो चल रहा हो उस पर पूर्ण रूप से विश्वास रखें। हाँ अगर कहीं से संदेह लगे तो आप दूसरे डॉ से सलाह लेने से ना चुके।

रोग की गंभीरता को देखते हुए देखभाल कर्ता अपने हिसाब से देखने आने वाले को व्यवस्थित कर सकते है जिससे अस्पताल में कोई अनावश्यक कोई भीड़ इक्कठा ना। हो।

कुछ रोग ऐसे होते है जिसने ना केवल रोगी अपितु पूरे परिवार को संयम रखना पड़ता है उदाहरण द्वद्व लिये अगर घर पर किसी को मधुमेह/डायबिटीज का पता लगा हो तो ना केवल मरीज़ को बल्कि पूरे परिवार को कुछ समय के लिये मीठा खाना बंद कर देना चाहिये, आवश्यक ना हो तो घर पर मिठाई ना लाये, इस से मरीज़ का मनोबल बढ़ेगा और इस सकारात्मक आचरण से मरीज़ को बिना किसी दबाव से सहज भाव से मीठा छोड़ने में आसानी होगी।

चाहे हम कोई भी हो अपने जीवन काल में कभी ना कभी देखभाल कर्ता बनेंगे ही तो ऐसे में ज़रूरी है कि हम सब थोड़ा सा अपने आप को रोगी, रोग, उपचार के हिसाब से खुद को ढाल ले। डॉक्टर,अस्पताल कर्मी, फार्मेसी इन सभी को भी आवश्यकता है के ये देखभाल कर्ता की मनोदशा को भाँपते हुए सही ढंग से इनसे बात करे।जब हम अस्पताल से डिस्चार्ज होते है तो अस्पताल के सभी कर्मियों धन्यवाद देते है पर जो हमारे अपने जो क़रीब रहकर जो साथ देते है उनको हम कुछ नहीं कह पाते। रोगी,रोग और स्वास्थ्य के बीच में जो सभी चुनौतियों को परेशानियों को हँसकर मुस्कुरा कर जो आसानी से सम्भालता ऐसे लोग किसी योद्धा से कम नहीं, तो आओ आज इन्हें हम सब मिलकर सलाम करते है ।

मोदी के शब्दों में धार कम माँ, माटी, मानुष से उठा भरोसा

पिछले कई दशको से देश की जनता प्रत्येक स्वतंत्रता दिवस पर लाल किले की प्राचीर से आ रही आवाजो को बड़े आशाओं के साथ सुनती आ रही है . ये आवाजे भविष्य के सपने और ताकते दिखाती रही है . मगर पिछले एक दशक में भारत के प्रधानमंत्री के रूप में नरेंद्र मोदी ने राजनीतिक प्रतिद्वंद्वियों पर निशाना साधने के लिए स्वतंत्रता दिवस के भाषणों को बड़ी चतुराई से हथियार बनाया था, साथ ही साथ देश के शासन के लिए अपना दृष्टिकोण भी सामने रखा . लेकिन इस 15 अगस्त को दिल्ली के लाल किले की प्राचीर से राष्ट्र को संबोधित करने वाले मोदी पिछले दशक के अपने आत्मविश्वासी, जुझारू और तीखे स्वभाव से कुछ अलग लग रहे थे. इसका मतलब यह नहीं है कि मोदी का एक घंटे से ज़्यादा लंबा स्वतंत्रता दिवस भाषण अपनी उपलब्धियों के बारे में बड़े-बड़े दावों या अपने राजनीतिक प्रतिद्वंद्वियों को लताड़ लगाने से कम था. फिर भी, जून के लोकसभा चुनावों में उनकी भाजपा को मिले कमजोर जनादेश ने उन्हें प्रधानमंत्री के रूप में जीवित रहने के लिए चालाक सहयोगियों की अविश्वसनीय बैसाखियों पर निर्भर बना दिया और एक मजबूत और आक्रामक विपक्ष के उभरने से मोदी के शब्दों को एक फीके कॉकटेल में बदल दिया है . यदि पिछले दशक के उनके स्वतंत्रता दिवस के भाषणों में नागरिकों को मित्रों, भाइयों और बहनों और अंततः पिछले साल के अपने संबोधन के दौरान मेरे परिवारजनों के रूप में सम्मानित किया गया था तो मोदी ने इस बार अधिक सामान्य सम्बोधन देशवासियों वाला था. अधिकांश समय, मोदी ने पिछले दशक की अपनी उपलब्धियों को गिनाने पर ध्यान केंद्रित किया.

प्रधानमंत्री ने समान नागरिक संहिता की आवश्यकता सहित जो कुछ घोषणाएं कीं, वे बड़े पैमाने पर पुराने चुनावी वादों की पुनरावृत्ति थीं. शायद, इसका उद्देश्य जनता का ध्यान आकर्षित करने या राजनीतिक प्रतिद्वंद्वियों को झटका देने की तुलना में अपने स्वयं के मतदाता आधार को आश्वस्त करना अधिक था. जो लोग समान नागरिक संहिता (यूसीसी) को आगे बढ़ाने के पीछे भाजपा की राजनीतिक अनिवार्यताओं से परिचित हैं, वे जानते होंगे कि प्रधानमंत्री का वास्तव में क्या मतलब था. भ्रष्टाचार के खिलाफ युद्ध प्रधानमंत्री ने 'परिवारवाद' और 'भ्रष्टाचार' के खिलाफ अपने तीखे हमले के साथ जो राजनीतिक प्रहार करने की कोशिश की, वह भी लोकसभा चुनाव अभियान की खुमारी और उनके पिछले स्वतंत्रता दिवस के भाषण की नीरस पुनरावृत्ति जैसा लग रहा था, जिसमें उन्होंने देश को 'तीन बुराइयों' भ्रष्टाचार, परिवारवाद और तुष्टिकरण की राजनीति के खिलाफ चेतावनी दी थी. 'भ्रष्टाचारियों के खिलाफ डर का माहौल बनाने' के लिए 'भ्रष्टाचार के खिलाफ युद्ध' के उनके नए दावे को, निश्चित रूप से, उनके राजनीतिक प्रतिद्वंद्वियों के लिए आने वाले दिनों में उनके खिलाफ और अधिक तीव्र कार्रवाई की चेतावनी के रूप में देखा जाएगा.

प्रधानमंत्री ने समान नागरिक संहिता की आवश्यकता सहित जो कुछ घोषणाएं कीं, वे बड़े पैमाने पर पुराने चुनावी वादों की पुनरावृत्ति थीं. शायद, इसका उद्देश्य जनता का ध्यान आकर्षित करने या राजनीतिक प्रतिद्वंद्वियों को झटका देने की तुलना में अपने स्वयं के मतदाता आधार को आश्वस्त करना अधिक था.

बात जब आजादी की होगी तो बात नारी की होगी और जब बात नारी की होती है तो बात ममता की होती है . लेकिन अभी ममता कुचली जा रही है कोल्कता से लेकर उत्तराखंड तक और देश के अन्य कोनो तक भी . लेकिन चर्चा तो ममता बनर्जी की ज्यादा है लोग कह रहे रहे की प.बंगाल में माँ माटी मानुष से अब भरोसा भरोसा टूट रहा है .

ममता की राजनीतिक सफलता में महिलाओं की अहम भूमिका रही है। 2008 में सीपीआई(एम) के खिलाफ अपनी लड़ाई के आखिरी चरण में प्रवेश करते समय उनका नारा था 'मा–माटी–मानुष' – महिलाएं, जमीन और लोग। ममता बनर्जी का पश्चिम बंगाल की जनता, खासकर महिला मतदाताओं के बीच भावनात्मक संबंध है , यह सम्बन्ध 2011 में उनके असाधारण तरीके से सत्ता में आने के बाद पहली बार मुख्यमंत्री से और भी अधिक मजबूत हो गए । लेकिन तृणमूल कांग्रेस के संस्थापक नेता अब अपने करियर की सबसे बड़ी राजनीतिक चुनौती का सामना कर रही हैं। उन्हें उस भरोसे को बनाए रखने की जरूरत है जिसे उन्होंने कभी ताकतवर सीपीआई(एम) के नेत नेतृत्व वाले वाम मोर्चे के खिलाफ कई सालों की कड़ी मेहनत से हासिल किया था, ममता बनर्जी इस समय अपने करियर की सबसे बड़ी राजनीतिक चुनौती का सामना कर रही हैं। उन्हें उस भरोसे को बनाए रखने की जरूरत है जिसे उन्होंने कभी ताकतवर सीपीआई (एम) के नेतृत्व वाले वाम मोर्चे के खिलाफ कई सालों की कड़ी मेहनत से हासिल किया था,

ममता बनर्जी जो इस समय मुख्यमंत्री, गृहमंत्री एवं स्वास्थ्य मंत्री भी हैं। 9 अगस्त को आर.जी. कर मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल में प्रशिक्षु डॉक्टर के साथ हुए जघन्य बलात्कार एवं हत्या के विरोध में कोलकाता एवं अन्य जिलों में लगभग 300 लोगों द्वारा स्वत:स्फूर्त तरीके से विरोध प्रदर्शन की आग फैलना ममता बनर्जी के नेतृत्व वाली सरकार की स्पष्ट निंदा है.

14 अगस्त की रात को हजारों की संख्या में उमड़ी महिलाओं ने उन्हें यह संदेश दिया कि उनकी 'पार्टी–सरकार', जिसमें नौकरशाह और पुलिसकर्मी स्थानीय तथाकथित नेताओं या सत्ता के दलालों के इशारे पर काम करने वाले गुलाम थे, अब स्वीकार्य नहीं है। आरजी कार की घटना पर विरोध प्रदर्शन में लोगों को डराने–धमकाने, नौकरशाही के भ्रष्टाचार और लोगों की समस्याओं के प्रति उदासीनता, बाहुबलियों और छोटे–मोटे पार्टी के लोगों द्वारा बड़े लोगों के संरक्षण में पैसे कमाने के रैकेट के बारे में भी बात की गई जो कि अब हर दिन की बात हो गई है। बलात्कार–हत्या की घटना में विफलताओं और चूकों की बढ़ती सूची से पता चलता है कि ममता सरकार नौकरशाही, पुलिस और सार्वजनिक संस्थानों और सेवाओं के प्रबंधन के लिए जिम्मेदार लोगों पर नियंत्रण नहीं रख पा रही है। इन सभी विफलताओं के लिए मुख्यमंत्री जवाबदेह हैं। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने सोशल मीडिया पर पोस्ट कर कोलकाता के आरजी कर अस्पताल बलात्कार–हत्या मामले में आरोपियों को बचाने का प्रयास अस्पताल और स्थानीय प्रशासन पर गंभीर सवाल उठाए हैं. हालांकि उनके इस बयान के बाद तृणमूल कांग्रेस भड़क गई और लोकसभा में विपक्ष के नेता की आलोचना करते हुए कहा कि ती उन्हें अर्थात टीएमसी केंद्र में पिछली कांग्रेस सरकारों के दौरान महिला सुरक्षा के निराशाजनक ट्रैक रिकार्ड को ध्यान में रखना चाहिए. बनर्जी ने मामले को सीबीआई को सौंपने के कलकत्ता हाई कोर्ट के फैसले का भी स्वागत किया. ममता कहा कि सीबीआई द्वारा मामले को अपने हाथ में लेने से हमें कोई समस्या नहीं . हम चाहते हैं कि इसे जल्द से जल्द सुलझाया जाए. बनर्जी ने इस घटना का कथित रूप से राजनीतिकरण करने और विरोध प्रदर्शन भड़काने के लिए भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी और विरोध प्रदर्शन भड़काने के लिए भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी और भारतीय जनता पार्टी पर भी निशाना साधते हुए इसकी तुलना बंगलादेश के छत्र आन्दोलन से की .

'हमें न्याय चाहिए' की मांग द्वारा पुलिस से बेहतर जांच, कार्यस्थलों पर महिलाओं के लिए बेहतर सुरक्षा और संरक्षा, बेहतर प्रशासन और आरजी कर जैसे संस्थानों के प्रमुखों द्वारा बेतुके इनकार या गलत कवर अप न करने की मांग तक सीमित नहीं है, यह एक अल्टीमेटम है। उनके निर्वाचन क्षेत्र की महिलाएं, चाहे वे शहरी गरीब हों या ग्रामीण, लक्ष्मी भंडार मासिक नकद हस्तांतरण के लिए आभारी हैं या किसी अन्य सरकारी योजना के तहत लाभार्थी हैं, जिनकी कुल संख्या लगभग 2 करोड़ है, उन्हें धोखा नहीं दिया जा सकता, उनके साथ हल्के में नहीं लिया जा सकता या यदि वे न्याय की मांग करती हैं तो उन्हें न्याय से वंचित नहीं किया जा सकता। अब तक महिला मतदाता ममता और उनकी सरकार को दोष देने से बचती रही हैं। उन्होंने व्यक्तिगत रूप से, नौकरशाही और पुलिस को ही कटघरे में खड़ा किया है। इस बार मामला अलग है। आरजी कार कांड की पीड़िता के लिए न्याय की मांग करने के लिए अपनी 'विरोध' रैली की तारीख पहले करके ममता ने दिखा दिया है कि उन्हें व्यक्तिगत रूप से जो राजनीतिक नुकसान हुआ है, उसकी भरपाई करने के लिए उनके पास समय नहीं है।

ममता के पास संवेदनशील मामलों के प्रबंधन में चूक करने का एक लंबा इतिहास है, जिसकी शुरुआत 2012 के पार्क स्ट्रीट सामूहिक बलात्कार से हुई, जिसे उन्होंने शुरू में पीड़िता को शर्मिंदा करके खारिज कर दिया था और इसे 'शाजानो घोटोना' यानी एक नाटक की घटना कहा था, और फिर 2013 में कामदुनी में एक कॉलेज छात्रा की बर्बर हत्या और सामूहिक बलात्कार। दोनों घटनाओं के विरोध में जनता सड़कों पर उतर आई, ठीक उसी तरह जैसे 'निर्भया' की मौत ने महिलाओं को संगठित होने के लिए प्रेरित किया।

अब से लेकर 2026 तक, जब अगले राज्य विधानसभा चुनाव होने हैं, ममता को शायद अपने करियर की सबसे कठिन राजनीतिक चुनौती से निपटना होगा। उन्हें सत्ता विरोधी लहर और उन धारणाओं से खुद को बचाना होगा जो उनके बारे में जड़ जमा चुकी हैं, जिन्हें विपक्ष द्वारा लगातार भ्रष्ट, धूर्त और सांप्रदायिक बताया जाता है, जो चुनाव जीतने के लिए मुस्लिम तुष्टिकरण का कार्ड खेलती हैं।

टीनेजर्स का प्यार पैरेंट्स क्या करें यार

इस उम्र में बच्चे इतने परिपक्व और इमोशनली मेच्योर नहीं होते हैं कि रिश्तो की गहराई को समझ सके दूसरी ओर इसी उम्र में बच्चे घर की दहलीज से बाहर कदम रखकर दुनिया को जान समझा और परख रहे होते हैं पहली बार मां–बाप की छाया के बगैर रिश्ते एक्सप्लोरर कर रहे होते हैं ऐसे में पेरेंट्स की किसी भी बंदिश या रोक–टोक पर उन्हें विद्रोही सभा हथियार करने की भावना उत्प्रेरित कर देती है.

उसे समय मेरी उम्र कुछ 10 12 वर्ष की रही होगी जब मेले आदि में या कहीं किसी के घर के फंक्शन में लाउडस्पीकर पर गाना बजता था मैं 17 बरस का तू 16 बरस की,%गर मिल जाए नैना... गाना अच्छा लगता था पर समझ में नहीं आता था इस गाने का मतलब क्या है. आपने भी सुना होगा और अच्छा लगा होगा कुछ कुछ हुआ भी होगा. इसी दौर में एक गाना और आया था 16 बरस की बाली उमर को सलाम सलाम तेरी पहली नजर को सलाम. उम्र 16 कि भी आई और 18 की भी. पहली नज़र को सलाम की ख्वाहिश लिए जवान होगये मेरे दिमाग में यह प्रश्न रुक जा कि आखिर यह नाम चेंज शेयर कई 16 बरस की उम्र को जितना डबल डोर इतना सब क्यों करते हैं इसका जवाब बायोलॉजी की किताबों में भी मिलता है एक रिपोर्ट कहती है कि 13 से 18 वर्ष की जो उम्र होती है ना वह बदलाव और विकास की दृष्टि में सबसे अहम होती है यही वह समय होता है जब टीनएजर बचपन की डगर छोड़ जवानी की दहलीज पर कदम रख रहे होते हैं उनके शरीर में हारमोंस का उतार चढ़ाव होता रहता है इस दौरान उनका शरीर और मां तेजी से बदल रहा होता है. पहली बार उनके मन में अपोजिट सेक्स के प्रति अट्रैक्शन का भाव देखा है यही वह उम्र होती है जिसमें टीनएजर्स प्यार में अक्सर पड़ जाया करते हैं. 14 15 साल की उम्र में प्यार के चक्कर में पड़ जाना इमोशनल नहीं होता यह बायोलॉजिकल होती है इस उम्र में टीनएजर्स पराया प्यार और इमोशंस को तो ठीक से समझते भी नहीं है वह सिर्फ नए अनुभवों से गुजारना चाहते हैं जो उनके मन में चल रहा होता है जो उन्हें आनंद देता रहता है. लेकिन क्या करें भाई पेरेंट्स की नजर में तो बच्चे हमेशा नादान रहते हैं छोटे ही रहते हैं अब चाहे उनकी उम्र कितनी भी हो वैसे भी 15 16 साल की उम्र तो नादानी भारी होती है इस उम्र में बच्चों से परिपक्व था या तार्किकता के फैसले की उम्मीद तो की ही नहीं जा सकती अब ऐसे इस वक्त में यदि बच्चे प्यार में पड़े और ऐसी खबर मां–बाप को मिल जाए तो उनका आग बबूला हो जाना लाजमी है अरे उन्हें लगता है कि उनके परवरिश में कोई कमी रह गई है कुछ कसर कहीं पर बच गई थी इसलिए बच्चे ऐसा गलत कदम उठा रहे हैं पेरेंट्स के लिए अपने बच्चों के इस प्यार को स्वीकार कर पाना आसान नहीं होता कई पेरेंट्स कुछ जबरदस्ती से प्यार के भूत को उतारने की कोशिश भी करते हैं लेकिन क्या ऐसा करना सही है मां–बाप को अपने डेंजरस टीनएजर्स के प्यार पर किस तरह रिएक्ट करना चाहिए. मानता हूं कि बच्चों को उनके प्यार के लिए खुली छूट दे देना गलत है लेकिन यह भी तो सही नहीं होगा कि उनके प्यार को पूरी तरह से नजरअंदाज कर दिया जाए आशीर्वाद कर दिया जाए दोनों ही कंडीशन बच्चों के लिए खतरनाक शादी हो सकती है क्योंकि इस उम्र में बच्चे इतने परिपक्व और इमोशनली मेच्योर नहीं होते हैं कि रिश्तो की गहराई को समझ सके दूसरी ओर इसी उम्र में बच्चे घर की दिल्ली से बाहर कदम रखकर दुनिया को जान समझा और परख रहे होते हैं पहली बार मां–बाप की छाया के बगैर रिश्ते एक्सप्लोरर कर रहे होते हैं ऐसे में पेरेंट्स की किसी भी बंदिश या रोक–टोक पर उन्हें विद्रोही सभा हथियार करने की भावना उत्प्रेरित कर देती है.

क्योंकि कोई बच्चा कितने दोस्त बनाएगा कैसे दोस्त बनाएगा वह बढ़िया प्रेमी बन पाएगा या नहीं यह सारी बातें काफी हद तक इस बात पर निर्भर करती है फिर बच्चों के अपने मां–बाप के साथ रिश्ता कैसा है वरिष्ठ कितना मधुर है अगर बच्चे और पेरेंट्स के बीच फ्रेंडली रिलेशंस हो तो दोनों साथ–साथ में समय बिताते हो तो इसकी पूरी संभावना है कि वह बच्चा दूसरों के लिए इंपति रखेगा सामाजिक रूप से फ्रेंडली और मुखर होगा अच्छा लवर भी साबित हो सकता है जबकि जो बच्चे अपने पेरेंट्स से डरते हैं और बातें करने से कतराते हैं उनमें दोस्तों की कमी या कम उम्र में टॉक्सिक रिश्तों की आशंका बढ़ जाती है. यही समय होता हैँ पेरेंट्स का बच्चों से दोस्ताना व्यवहार करने का, पेरेंट्स को अपने बच्चों का दोस्त बनना चाहिए लेकिन मैं कहता हूं पेरेंट्स को दोस्त की जगह बच्चों का कोच बनना चाहिए जो एक जो उन्हें रिलेशन के बारे में बता सके अर्थात उन्हें रिलेशन कोच की भूमिका निभानी चाहिए अपने अनुभवों का इस्तेमाल करते हुए उन्हें सीख देनी चाहिए इस दौरान विशेष ध्यान रखें कि उन पर अपनी सोच ठोकने की कोशिश बिल्कुल ना करें.

प्रशंसनीय PODCAST YouTube SCG NEWS

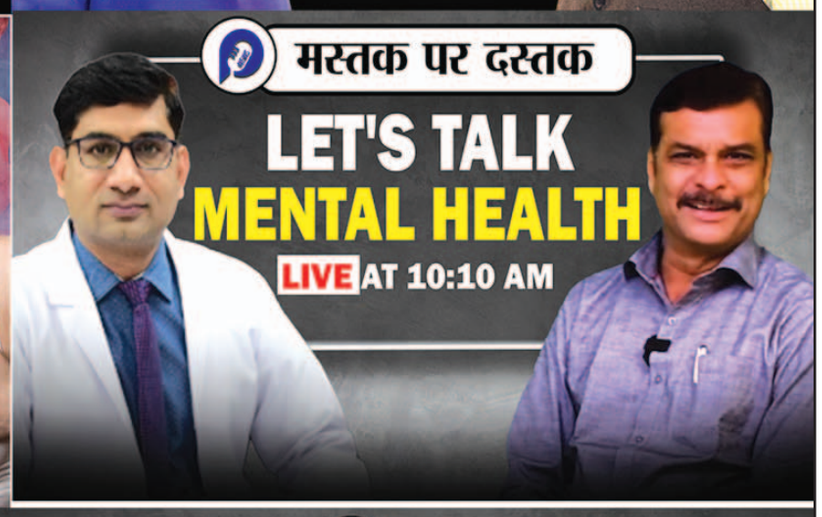

सारे जहां से अच्छा,
हिंदुस्तान हमारा.....

असंख्य बलिदानों से
संकल्पित समर्पित संतानों से...
भारत को परिभाषित

आजादी के उत्सव

स्वतंत्रता दिवस

एवं रक्षाबंधन

की हार्दिक शुभकामनाएं

श्याम बिहारी जायसवाल
मंत्री - लोक स्वास्थ्य और परिवार कल्याण,
चिकित्सा शिक्षा, छत्तीसगढ़ शासन

सारे जहां से अच्छा,
हिंदुस्तान हमारा.....

असंख्य बलिदानों से
संकल्पित समर्पित संतानों से...
भारत को परिभाषित

आजादी के उत्सव

स्वतंत्रता दिवस

एवं रक्षाबंधन

की हार्दिक शुभकामनाएं

श्रीमति लक्ष्मी रजवाड़े
कैबिनेट मंत्री छत्तीसगढ़ शासन
(महिला एवं बाल विकास तथा समाज कल्याणि वभाग)

सारे जहां से अच्छा, हिंदुस्तान हमारा

असंख्य बलिदानों से
संकल्पित समर्पित संतानों से...
भारत को परिभाषित करते

आजादी के उत्सव

स्वतंभता दिवस

एवं रक्षाबंधन

की हार्दिक शुभकामनाएं

केदार कश्यप कैबिनेट मंत्री
वन एवं जलवायु परिवर्तन, जल संसाधन, कौशल विकास, संसदीय कार्य एवं सहकारिता विभाग छत्तीसगढ़ शासन

GRAPHICS BY:7748035015

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक - नरेन्द्र कुमार पाण्डेय द्वारा आसमां पब्लिशर्स इंडिया प्रा.लि. जयराम काम्पलेक्स गली, मालवीय रोड, जयस्तंभ चौक रायपुर (छ.ग.) से मुद्रित एवं 6, विकास विहार कालोनी, सांई वाटिका,जोरातालाब के पास रायपुरा, रायपुर (छ.ग.) से प्रकाशित। संपादक- नरेन्द्र कुमार पाण्डेय, मो. 88171-94979